वर्ष- 03 अंक -10 मार्च 2026 मूल्य - 50 रू.

SCG न्यूज

लाईफ वर्सिटी

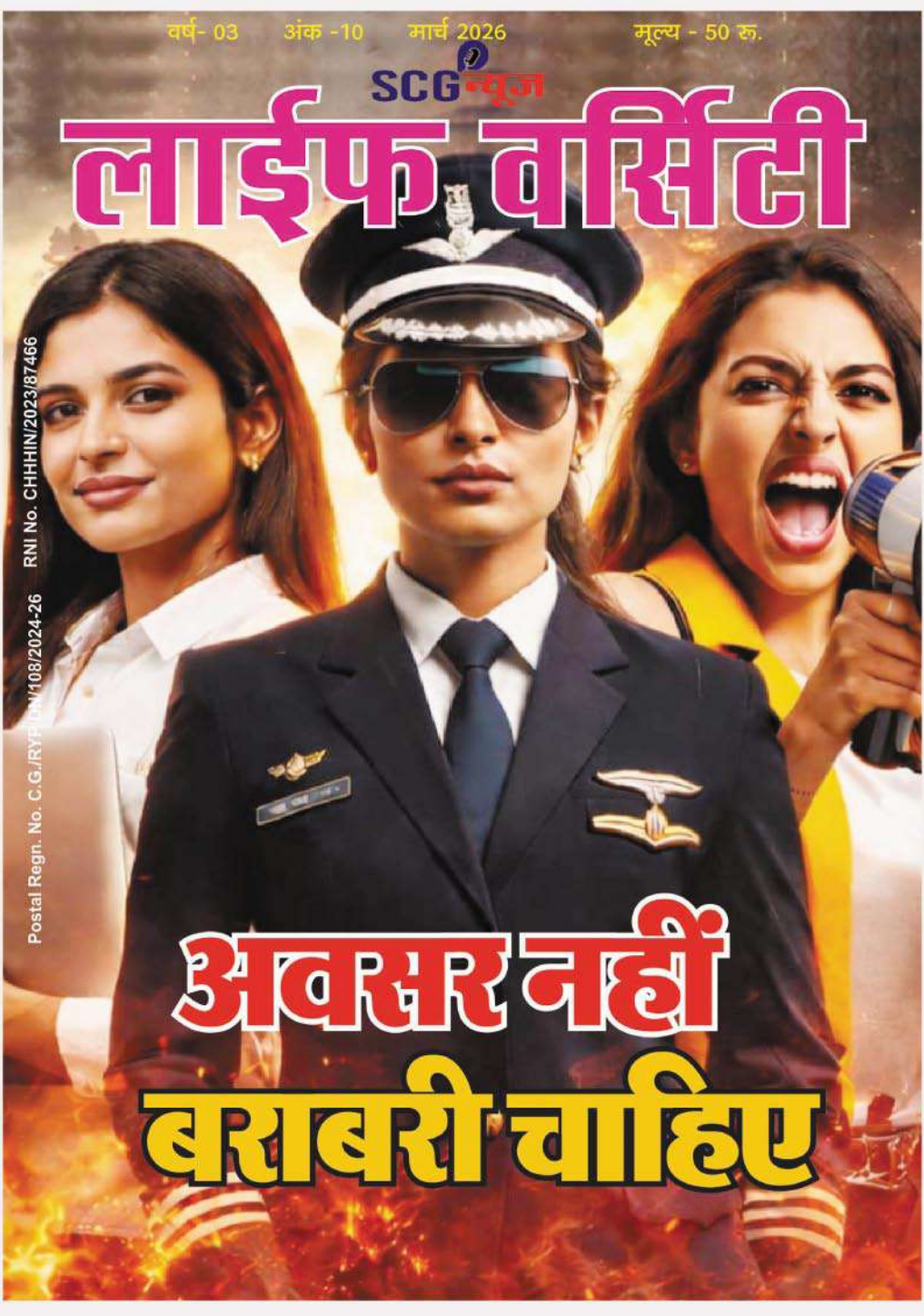

RNI No. CHHHIN/2023/87466

Postal Regn. No. C.G./RYP-DN/108/2024-26

अवसर नहीं बराबरी चाहिए

www.phzinfo.com

Positive Health Zone

Integrated Holistic
Health Care System

Unique Wellbeing Center

Holistic Healthcare Team

Our INTEGRATED SERVICES

Holistic Path Of Wellness & Wellbeing

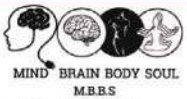

1. **Personal Energy Blueprint at Quantum Veda Lab with Latest Quantum Devices-**

   Aura, Chakra, Biofield, Lifeforce Energy Analysis.

2. **Digital Nadi Parikshan Modern Nadi Veda Pulse -**

   Personality Analysis
   Body Type, Mind Type, Energy Type.

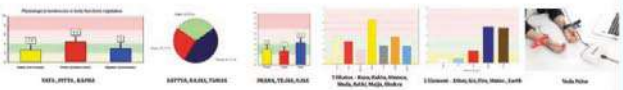

3. **Life Style Clinic**

   Personalised Diet Plan, Lifestyle Plan, Day Plan, Detox Plan as per your Quantum Analysis.

4. **Body Detox & Rejuvenation with Kerala Ayurveda Panchkarma.**

5. **Mind Detox & Stress Management with NLP & Counselling.**

6. **Inner Alingment, Chakra Balancing with PNP Meditation.**

Get In Touch
9109185028, 9109185025

A-41, Amrapali Society,
Near Ganga Diagnostics, Raipur, Chhattisgarh

www.phzinfo.com

सम्पादक
नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

प्रबंधक
हर्षित पाण्डेय

सलाहकार मण्डल
डॉ अनिल गुप्ता रायपुर
डॉ उदयभान सिंह चौहान रायपुर
प्रो. डॉ शुभ्रा सान्याल नई दिल्ली
प्रो तपन मोहन्ति ओड़िसा

सलाहकार (मीडिया मार्केटिंग एंड एआई)
भूपेन्द्र सिंग

छत्तीसगढ़ कार्यालय
ए-32, आम्रपाली सोसाइटी, कलर्स मॉल के पीछे, पचपेड़ी नाका
रायपुर (छ.ग.)
मो. 88171-94979

मध्यप्रदेश कार्यालय
अनामिका पाण्डेय
गोकुलधाम बेलौहान टोला,
सामान, रीवा मप्र

प्रतिनिधि
अम्बुज अग्निहोत्री जबलपुर
संजीव पाण्डेय भोपाल
राजेश सिंह बिलासपुर

कानूनी सलाहकार
संजयेंदु पंड्या

परिकल्पना
रजनीकांत पाण्डेय

अंदर के पृष्ठों पर

02 महिला सशक्तिकरण और Gen Z की आवाज़

6 अवसर की प्रतीक्षा नहीं, अवसर का निर्माण -मीनल चौबे

11 महतारी वंदन योजना से मातृशक्ति को मिला आर्थिक संबल

08 साइबर चुनौतियाँ और महिला सशक्तिकरण की नई परिभाषा

14 बाल अधिकारों की लड़ाई जागरूक समाज की जरूरत - डॉ. वर्णिका

क्रिकेट के हर फॉर्मेट में भारत का जलवा 28

महिला दिवस के नारों के बीच कड़वा सच 5
एक पीढ़ी ने सहा, दूसरी ने .. 16
संकल्प का बजट 18
Impact India AI समिट: 23
कलयुग से सतयुग की ओर AI युग 24
आदिवासी अस्मिता या चुनावी राजनीति? .. 27

SCAN & PAY

UPI ID: 329944413263914@cnrb

लाईफ वर्सिटी के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा बुरहानी प्रिंटर्स, सत्ती बाजार रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979
E-mail : scgnewsraipur@gmail.com | www.scgnews.in

महिला सशक्तिकरण और Gen Z की आवाज़

Gen Z के नज़रिये से महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण, यह शब्द आज सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक बड़ी प्रक्रिया बन चुका है। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, सेना, खेल और व्यापार—हर क्षेत्र में महिलाएँ अपनी पहचान बना रही हैं। लेकिन अगर आज की नई पीढ़ी, यानी Gen Z महिलाओं की बात करें, तो उनका नज़रिया पहले की पीढ़ियों से काफी अलग है। वे सिर्फ बराबरी नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और अपने निर्णय लेने के अधिकार को ज्यादा महत्व देती हैं।

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

आज की Gen Z महिला अपने करियर, रिश्तों, शादी और जीवन के फैसलों को लेकर अधिक स्पष्ट और मुखर है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भी उनकी आवाज़ को एक नई ताकत दी है। हालांकि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं—सुरक्षा, सामाजिक दबाव, और कार्यस्थल पर असमानता जैसे मुद्दे आज भी चर्चा में हैं। ऐसे में सवाल यही है—क्या महिला सशक्तिकरण सिर्फ नीतियों और नारों तक सीमित है, या सच में समाज की सोच बदल रही है?

बदलती दुनिया में Gen Z का नज़रिया

समाज की हर बड़ी कहानी में एक ऐसा मोड़ आता है, जब पुरानी सोच और नई चेतना आमने-सामने खड़ी हो जाती है। आज का समय भी कुछ वैसा ही है। एक तरफ सदियों से चली आ रही सामाजिक संरचनाएँ हैं, जिनमें महिलाओं की भूमिका सीमित और परिभाषित रही है। दूसरी तरफ एक नई पीढ़ी है—जिसे हम Gen Z कहते हैं—जो इन सीमाओं को चुनौती दे रही है।

महिला सशक्तिकरण आज सिर्फ एक सामाजिक कार्यक्रम या सरकारी नीति का विषय नहीं रह गया है। यह एक मानसिक क्रांति है।

यह उस चेतना का नाम है, जिसमें एक महिला खुद को किसी की परिभाषा से नहीं, बल्कि अपनी पहचान से देखना चाहती है।

लेकिन इस परिवर्तन को समझने के लिए हमें थोड़ा पीछे लौटना होगा।

संघर्ष से आत्मविश्वास तक की यात्रा

भारतीय समाज में महिला की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है, लेकिन उसका सम्मान और अधिकार हमेशा समान नहीं रहे। इतिहास के पन्नों में झाँकें तो एक तरफ हमें गर्गी, मैत्रेयी और झाँसी की रानी जैसी सशक्त महिलाएँ दिखाई देती हैं, तो दूसरी तरफ एक ऐसा दौर भी दिखाई देता है जब महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित होती चली गई। लंबे समय तक समाज

> Gen Z महिलाओं की सोच को अगर तीन शब्दों में समझा जाए, तो वे हैं— स्वतंत्रता, पहचान और आत्मसम्मान। वे सिर्फ बराबरी की बात नहीं करतीं, बल्कि अपने जीवन के निर्णयों पर अधिकार चाहती हैं। आज की युवा महिला यह सवाल पूछने से नहीं डरती कि— अगर पुरुष अपने सपनों के पीछे जा सकता है, तो महिला क्यों नहीं?

ने महिला की पहचान को तीन शब्दों में बाँध दिया—बेटी, पत्नी और माँ।

इन भूमिकाओं का महत्व अपने स्थान पर था, लेकिन समस्या तब शुरू हुई जब महिला की पूरी पहचान इन्हीं भूमिकाओं तक सीमित कर दी गई। शिक्षा का अधिकार सीमित था, आर्थिक स्वतंत्रता लगभग न के बराबर थी और सामाजिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बहुत कम थी। लेकिन समय बदलता है। और जब समाज बदलता है तो उसकी सबसे गहरी हलचल चेतना में दिखाई देती है।

पिछले कुछ दशकों में महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में तेजी से अपनी जगह बनाई है। आज महिलाएँ सिर्फ घर की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं हैं। वे विज्ञान, राजनीति, सेना, खेल, मीडिया और व्यापार—हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। लेकिन असली परिवर्तन सिर्फ अवसर मिलने से नहीं आता। असली परिवर्तन तब आता है जब सोच बदलती है।

यहीं से शुरू होती है Gen Z महिलाओं की कहानी। यह वह पीढ़ी है जो इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के दौर में बड़ी हुई है। इनके लिए दुनिया की सीमाएँ उतनी संकीर्ण नहीं हैं जितनी पिछली पीढ़ियों के लिए थीं। Gen Z महिलाओं की सोच को अगर तीन शब्दों में समझा जाए, तो वे हैं— स्वतंत्रता, पहचान और आत्मसम्मान।

वे सिर्फ बराबरी की बात नहीं करतीं, बल्कि अपने जीवन के निर्णयों पर अधिकार चाहती हैं। आज की युवा महिला यह सवाल पूछने से नहीं डरती कि— अगर पुरुष अपने सपनों के पीछे जा सकता है, तो महिला क्यों नहीं? यह पीढ़ी परंपराओं को पूरी तरह नकारती नहीं है, लेकिन उन्हें आँख बंद करके स्वीकार भी नहीं करती। वह हर नियम से पहले एक सवाल पूछती है—'क्या यह नियम न्यायपूर्ण है?' और शायद यही प्रश्न समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर खड़ा हो रहा है।

डिजिटल दुनिया और महिला की नई आवाज

बीसवीं सदी के अधिकांश आंदोलनों की अपनी सीमाएँ थीं। उनकी आवाज़ अक्सर एक शहर या एक देश तक सीमित रह जाती थी। लेकिन आज की दुनिया अलग है। आज एक वीडियो, एक पोस्ट या एक ट्वीट लाखों लोगों तक पहुँच सकता है। यही कारण है कि सोशल मीडिया ने महिला सशक्तिकरण की आवाज को एक नया मंच दिया है। कई ऐसे मुद्दे, जो पहले घर की चार दीवारों में दब जाते थे, अब सार्वजनिक चर्चा का विषय बन रहे हैं। यही वह दौर है जब महिलाओं ने यह महसूस किया कि उनकी आवाज अकेली नहीं है। उनके अनुभव साझा हैं। उनकी समस्याएँ सामूहिक हैं। और जब अनुभव सामूहिक हो जाते हैं, तो वे आंदोलन का रूप ले लेते हैं।

सशक्तिकरण की असली परिभाषा

महिला सशक्तिकरण को अक्सर केवल आर्थिक स्वतंत्रता से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन यह परिभाषा अधूरी है।

सशक्तिकरण का अर्थ केवल नौकरी करना या पैसे कमाना नहीं है। सशक्तिकरण का अर्थ है– निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास, और अपनी आवाज को व्यक्त करने का साहस। एक महिला घर संभालते हुए भी सशक्त हो सकती है, अगर उसके निर्णयों का सम्मान किया जाए। और एक महिला उच्च पद पर होते हुए भी असशक्त महसूस कर सकती है, अगर उसकी आवाज को महत्व न दिया जाए। इसलिए सशक्तिकरण का मूल प्रश्न सत्ता का नहीं, सम्मान का है।

लेकिन हर परिवर्तन के साथ एक टकराव भी आता है। आज की Gen Z महिला जिस स्वतंत्रता की बात करती है, वह कई बार पारंपरिक सामाजिक ढांचे से टकरा जाती है। समाज अभी भी कई जगहों पर महिलाओं से वही अपेक्षाएँ रखता है जो दशकों पहले रखी जाती थीं कि वे अपने सपनों से पहले परिवार को प्राथमिकता दें। कि वे सीमाओं के भीतर रहें। कि वे प्रश्न कम करें और समझौते ज्यादा। लेकिन नई पीढ़ी इस समझौते को सहज रूप से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। यही कारण है कि आज कई परिवारों और सामाजिक समूहों में एक पीढ़ीगत संवाद चल रहा है—कभी शांत, कभी तीखा। यह टकराव केवल विचारों का नहीं है। यह उस पहचान का संघर्ष है जिसमें एक महिला खुद को परिभाषित करना चाहती है।

आधुनिकता की चुनौतियाँ

हालांकि आधुनिकता ने महिलाओं को कई अवसर दिए हैं, लेकिन इसके साथ कुछ नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डिजिटल दुनिया ने जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, वहीं ऑनलाइन ट्रोलिंग और साइबर उत्पीड़न जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। कार्यस्थलों पर महिलाओं की संख्या बढ़ी है, लेकिन समान वेतन और सम्मान का सवाल अभी भी पूरी तरह हल नहीं हुआ है। सुरक्षा का मुद्दा भी आज के समाज में एक बड़ी चिंता बना हुआ है। यह विरोधाभास दिलचस्प है— एक तरफ महिलाएँ अंतरिक्ष तक पहुँच रही हैं, दूसरी तरफ उन्हें अपने ही शहरों में सुरक्षित महसूस करने की लड़ाई लड़नी पड़ रही है।

फिर भी यह कहना गलत होगा कि समाज बिल्कुल नहीं बदल रहा। आज कई परिवार अपनी बेटियों को वही अवसर देना चाहते हैं जो बेटों को मिलते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। खेल और विज्ञान में भी उनकी उपलब्धियाँ लगातार सामने आ रही हैं। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि अब महिलाएँ अपनी कहानी खुद लिखना चाहती हैं। वे किसी और के द्वारा तय की गई भूमिका में फिट होने के बजाय अपनी पहचान गढ़ना चाहती हैं।

आज की Gen Z महिलाओं ने एक बात स्पष्ट कर दी है— वे केवल बदलाव की प्रतीक्षा नहीं करेंगी, बल्कि उसे निर्मित करेंगी। वे सवाल पूछेंगी। वे बहस करेंगी। और जरूरत पड़ने पर सामाजिक ढाँचों को बदलने की कोशिश भी करेंगी। यह परिवर्तन धीमा हो सकता है, लेकिन इसे रोका नहीं जा सकता। क्योंकि यह केवल महिलाओं का आंदोलन नहीं है। यह मानव समाज की चेतना में हो रहा परिवर्तन है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ पुरुष और महिला के बीच प्रतिस्पर्धा पैदा करना नहीं है। इसका अर्थ है— एक ऐसा समाज बनाना जहाँ दोनों की क्षमताओं और सपनों को बराबरी से सम्मान मिले। जब एक महिला सशक्त होती है, तो केवल उसका जीवन नहीं बदलता। उसके साथ एक परिवार, एक पीढ़ी और कई बार पूरा समाज बदल जाता है। और शायद यही कारण है कि आज की Gen Z महिला बहुत स्पष्ट शब्दों में कहती है— 'मुझे अवसर नहीं चाहिए,मुझे बराबरी चाहिए।'

यही वह आवाज है जो आने वाले समय में समाज की दिशा तय करेगी।

आज की नारी

हां मै आज की नारी हूं
हां मै आज की नारी हूं
रखती हुं छुने की चाह आसमां को
हां मै आज की नारी हूं।।

जान गई हूँ मै खुद को
पहचान गई हुं मै खुद को
मै ही सती मै ही सावित्री
पर अन्याय जहाँ होता
बन जाती दुर्गा और काली हुं
हां मै आज की नारी हुं।।

अब करती समझौता हद तक
मानती बंदिशो को सीमा तक
तोड़ देती हूँ उन बेडियोंको अब
जिनमें घुटने लगता दम मेरा
हां मै आज की नारी हूं।।

छुने की ख्वाहिश आसमां की
करती हर चुनौती को स्वीकार
छुकर आसमां पार कर लेती
हर चुनौती को आज
हां मै आज की नारी हूं
हां मै आज की नारी हूं।।

● संध्या सिंह (शिक्षिका)
भिलाई

संवेदना का चादर

संवेदनाओं के चादर पर,
पड़ी हुई सलवटों को ठीक कर,
अपनी लेखनी हाथ ले,
कुछ लकीरें खींच दी।
निरर्थक सी लगने वाली,
यहीं लकीरें बाद में सार्थक बनीं।
श्रमसाध्यता के बाद मुझे,
अर्थपूर्णता का एहसास कराने लगी।
तब वहीं संवेदना नये रूप,
नव-सौष्ठव के साथ मचलती,
हुई मेरे समक्ष आ खड़ी हुई।
शीघ्रता करो,अब देर नहीं,
मुझे अपने सृजन में ढाल लो।।

श्रीमती कल्याणी तिवारी 'कोकि'
कबीर नगर रायपुर

महिला दिवस के नारों के बीच कड़वा सच

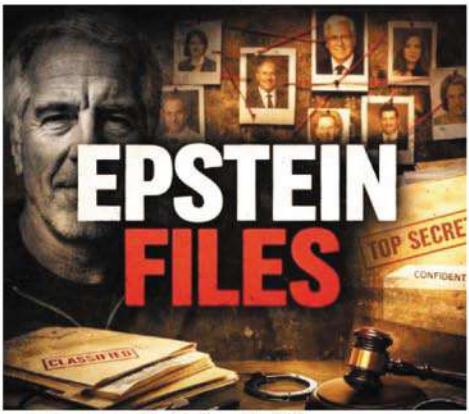

हर साल 8 मार्च को दुनिया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाती है। इस दिन मंचों से महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण की बातें की जाती हैं। लेकिन इसी समय दुनिया के सामने ऐसी घटनाएँ भी आती हैं जो यह पूछने पर मजबूर कर देती हैं कि क्या समाज सचमुच महिलाओं की सुरक्षा के प्रति उतना संवेदनशील है जितना वह दिखाता है।

एक तरफ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुख्यात यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन से जुड़ी फाइलों ने वैश्विक सत्ता और अपराध के भयावह गठजोड़ को उजागर किया है। वहीं दूसरी तरफ भारत के छोटे-छोटे कस्बों और गाँवों से आने वाली घटनाएँ यह बताती हैं कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा केवल किसी एक देश या समाज की समस्या नहीं है—यह पूरी मानव सभ्यता के सामने खड़ी एक गंभीर चुनौती है।

एपस्टीन पर आरोप था कि उसने वर्षों तक नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण और सेक्स ट्रैफिकिंग का एक संगठित नेटवर्क चलाया। उसके निजी द्वीप, निजी विमान और प्रभावशाली संपर्कों की चर्चा लंबे समय से होती रही थी। जब उससे जुड़ी लाखों फाइलों के दस्तावेज सामने आए तो दुनिया चौंक गई। इन दस्तावेज़ों में कई प्रभावशाली लोगों के साथ उसके संपर्कों का जिक्र सामने आया—जैसे डोनाल्ड ट्रम्प, बिल क्लिंटन, बिल गेट्स और एलोन मस्क जैसे नाम भी चर्चा में आए।

हालांकि किसी नाम का उल्लेख होना अपराध सिद्ध नहीं करता, लेकिन इस मामले ने यह जरूर दिखाया कि सत्ता, पैसा और प्रभाव के सबसे ऊँचे स्तरों पर भी महिलाओं और किशोरियों के शोषण के नेटवर्क मौजूद हो सकते हैं। 2019 में जब एपस्टीन को फिर गिरफ्तार किया गया, तो उम्मीद थी कि अदालत में उसके नेटवर्क के कई रहस्य खुलेंगे। लेकिन मुकदमे से पहले ही जेल में उसकी संदिग्ध मौत हो गई और कई सवाल हमेशा के लिए अधूरे रह गए।

समाज के भीतर छिपी क्रूरता

इसी समय भारत के छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्र जशपुर से आई एक घटना ने समाज को झकझोर दिया। जशपुर जिले के एक गाँव में 48 वर्षीय महिला को जादू-टोना करने के शक में बेहद क्रूर तरीके से मार दिया गया। आरोपियों ने पहले उसके साथ बर्बर हिंसा की और उसके शरीर को गंभीर रूप से घायल किया, जिसके बाद उसकी हत्या कर दी गई। इस मामले में पुलिस ने महिला के पति सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया है। यह घटना केवल एक हत्या नहीं है, बल्कि उस मानसिकता का भयावह उदाहरण है जिसमें अंधविश्वास और सामाजिक हिंसा का सबसे बड़ा शिकार अक्सर महिलाएँ बनती हैं।

भारत के कई ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में आज भी 'टोनही' या 'डायन' जैसे आरोपों के कारण महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएँ सामने आती हैं। जशपुर में ही कुछ महीनों पहले एक महिला को जादू-टोना के आरोप में सार्वजनिक रूप से पीटा गया था और अपमानित किया गया था। ऐसी घटनाएँ बताती हैं कि जब समाज में शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और कानून का प्रभाव कमजोर होता है, तो महिलाओं के खिलाफ हिंसा अंधविश्वास के रूप में सामने आती है।

महिला सुरक्षा का वैश्विक प्रश्न

एपस्टीन प्रकरण और जशपुर जैसी घटनाएँ भले ही अलग-अलग दुनिया की कहानियाँ लगती हों, लेकिन उनका मूल प्रश्न एक ही है— महिलाओं की सुरक्षा आखिर किसकी जिम्मेदारी है? एक तरफ दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों के बीच छिपे यौन अपराधों के नेटवर्क सामने आते हैं, और दूसरी तरफ समाज के हाशिए पर खड़ी महिलाओं को अंधविश्वास और हिंसा का शिकार होना पड़ता है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं है, बल्कि आत्ममंथन का दिन भी है। यह दिन हमें यह सोचने के लिए मजबूर करता है कि महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई केवल कानून बनाने से नहीं जीती जा सकती। इसके लिए समाज की सोच, संस्थाओं की जवाबदेही और सत्ता की नैतिकता—तीनों का बदलना जरूरी है। क्योंकि सच यही है— जब तक दुनिया के सबसे बड़े सत्ता केंद्रों से लेकर सबसे छोटे गाँव तक महिलाओं की गरिमा सुरक्षित नहीं होती, तब तक महिला दिवस केवल एक प्रतीक बना रहेगा। और शायद यही इस पूरे दौर का सबसे कठिन प्रश्न भी है— क्या हम सचमुच महिलाओं को सुरक्षित दुनिया देना चाहते हैं, या केवल उसके बारे में बातें करना चाहते हैं

नई सदी की नारी

अवसर की प्रतीक्षा नहीं, अवसर का निर्माण

मीनल चौबे

(महापौर)

नगरपालिक निगम रायपुर

> **आज के युवा और नई पीढ़ी सशक्त महिला की अलग परिभाषा देखते हैं। उनके अनुसार सशक्त महिला वह है जो घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों को समान रूप से निभा सके और हर क्षेत्र में अपनी क्षमता साबित कर सके।**

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा समय के साथ लगातार बदलती रही है। कभी इसे केवल शिक्षा से जोड़ा जाता था, लेकिन आज का डिजिटल युग इसे कहीं अधिक व्यापक रूप में देखता है। इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया ने नई पीढ़ी की सोच को बदला है, जिससे महिलाओं की भूमिका घर की सीमाओं से निकलकर समाज, प्रशासन और राजनीति तक फैल गई है।

इन्हीं बदलती परिस्थितियों और महिलाओं की बढ़ती भागीदारी पर **रायपुर की महापौर मीनल चौबे से लाइफ वर्सिटी संपादक नरेन्द्र पाण्डेय ने विशेष बातचीत की।** प्रस्तुत है इस चर्चा के प्रमुख अंश।

- *नरेन्द्र पाण्डेय- जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो क्या आपको लगता है कि 1997 से पहले और आज की पीढ़ी के बीच इसकी परिभाषा में बड़ा बदलाव आया है?*
- **मीनल चौबे** - बिल्कुल बदलाव आया है। अगर हम 1997 के पहले के समय को देखें तो उस दौर में महिला सशक्तिकरण का अर्थ बहुत सीमित था। उस समय समाज में यह माना जाता था कि यदि कोई महिला पढ़-लिख जाए और उसकी शिक्षा पूरी हो जाए तो वह सशक्त महिला है। उस समय शिक्षा ही महिलाओं के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। इसलिए पढ़ी-लिखी महिला को ही नारी शक्ति का प्रतीक समझा जाता था। लेकिन आज का समय पूरी तरह बदल चुका है। आज के युवा और नई पीढ़ी सशक्त महिला की अलग परिभाषा देखते हैं। उनके अनुसार सशक्त महिला वह है जो घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों को समान रूप से निभा सके और हर क्षेत्र में अपनी क्षमता साबित कर सके।
- *नरेन्द्र पाण्डेय - आपके व्यक्तिगत दृष्टिकोण से सशक्त महिला किसे कहा जाना चाहिए?*
- **मीनल चौबे** - मेरे व्यक्तिगत विचार से हर वह महिला सशक्त है जो अपने परिवार को अच्छे से संभालती है और अपने बच्चों का पालन-पोषण जिम्मेदारी से करती है। घर को संतुलित तरीके से चलाना आसान काम नहीं है। जो महिला अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देती है और उन्हें जीवन में स्थापित करती है, वह निश्चित रूप से सशक्त महिला है। लेकिन आज की नई पीढ़ी का नजरिया थोड़ा अलग है। आज के युवाओं के लिए सशक्त महिला वह है जो घर के साथ-साथ बाहर भी काम करे और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े।
- *नरेन्द्र पाण्डेय - क्या आपको लगता है कि आज की महिलाओं को अब भी आरक्षण की जरूरत है या वे योग्यता के आधार पर आगे बढ़ना चाहती हैं?*
- **मीनल चौबे** - पहले महिलाओं को अवसर पाने के लिए आरक्षण का सहारा लेना पड़ता था। लेकिन अब महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है। आज महिलाएँ अपनी योग्यता के आधार पर अवसर प्राप्त करना चाहती हैं। मैं स्वयं इसका उदाहरण हूँ। जब मैंने तीसरी बार नगर निगम पार्षद चुनाव लड़ा तो सामान्य श्रेणी से लड़ा। राजनीति में यह बहुत बड़ी

बात होती है कि किसी महिला को पुरुष उम्मीदवारों के बीच सामान्य सीट से मौका मिले। अगर आपके अंदर क्षमता है और आप मेहनत करते हैं तो राजनीति में भी अवसर मिलते हैं। इसी तरह जब मैं नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष बनी तो उस समय भी लोगों के मन में सवाल थे—क्या एक महिला इस जिम्मेदारी को निभा पाएगी? लेकिन जब आप काम करते हैं तो धीरे-धीरे लोग आपकी क्षमता को स्वीकार करते हैं।

■ *नरेन्द्र पाण्डेय- क्या मोबाइल और इंटरनेट के दौर ने महिलाओं की सोच को भी प्रभावित किया है?*

■ **मीनल चौबे** – हाँ, इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। मोबाइल और इंटरनेट ने लोगों को दुनिया से जोड़ दिया है। आज अगर कोई व्यक्ति किसी नेता या समाजसेवी के जीवन संघर्ष को समझना चाहता है तो वह आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकता है। इससे युवाओं को यह समझ आता है कि सफलता के पीछे संघर्ष और धैर्य दोनों जरूरी हैं। इसलिए आज की पीढ़ी मानसिक रूप से तैयार रहती है कि राजनीति या समाज सेवा में आगे बढ़ने के लिए समय और मेहनत दोनों लगते हैं।

■ *नरेन्द्र पाण्डेय – क्या राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पहले की तुलना में बढ़ी है? और आने वाले दस वर्षों में आप महिला सशक्तिकरण को किस रूप में देखती हैं?*

पहले राजनीति में महिलाओं की संख्या बहुत कम होती थी। लेकिन अब बड़ी संख्या में महिलाएँ समाज सेवा के लिए राजनीति में आ रही हैं। जब कोई महिला दूसरी महिला को सफल होते देखती है तो उससे प्रेरणा मिलती है। यही प्रेरणा आज बड़ी संख्या में महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने के लिए प्रेरित कर रही है।

■ **मीनल चौबे** – हाँ, बहुत बढ़ी है। पहले राजनीति में महिलाओं की संख्या बहुत कम होती थी। लेकिन अब बड़ी संख्या में महिलाएँ समाज सेवा के लिए राजनीति में आ रही हैं। जब कोई महिला दूसरी महिला को सफल होते देखती है तो उससे प्रेरणा मिलती है। यही प्रेरणा आज बड़ी संख्या में महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने के लिए प्रेरित कर रही है। मुझे लगता है कि आने वाले दस वर्षों में पुरुषों और महिलाओं के बीच अवसरों की बराबरी और मजबूत होगी। आज ही कई ऐसे उदाहरण देखने को मिल रहे हैं जहाँ महिलाएँ कई क्षेत्रों में पुरुषों से भी बेहतर काम कर रही हैं। यह प्रतिस्पर्धा नहीं है, बल्कि समाज के विकास की प्रक्रिया है।

■ *नरेन्द्र पाण्डेय – अंत में, आपके अनुसार सशक्त महिला की सबसे सरल परिभाषा क्या है?*

■ **मीनल चौबे**– मेरे अनुसार सशक्त महिला वह है जो अपने जीवन में ईमानदारी से काम करे और दूसरों के लिए समस्या नहीं बल्कि समाधान बने। अगर कोई महिला अपने परिवार, समाज और आसपास के लोगों के लिए सकारात्मक भूमिका निभाती है तो वही सच्चा सशक्तिकरण है।सशक्तिकरण की कोई एक तय परिभाषा नहीं है। जो महिला अपने क्षेत्र में पूरी ईमानदारी से काम करती है और सफलता प्राप्त करती है, वही वास्तव में सशक्त महिला है।

महिला सशक्तिकरण का सफर समाज की बदलती चेतना का प्रतीक है। शिक्षा से शुरू हुआ यह आंदोलन अब आत्मनिर्भरता, नेतृत्व, सामाजिक भागीदारी और आत्मविश्वास तक पहुँच चुका है। आज की महिला केवल अवसर की प्रतीक्षा नहीं करती—वह अवसर को पहचानती है, उसके लिए संघर्ष करती है और अपनी पहचान स्वयं गढ़ती है। डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल शिक्षा या अवसर तक सीमित नहीं रह गया है। आज यह आत्मविश्वास, नेतृत्व, सामाजिक भागीदारी और जिम्मेदारी का समन्वय बन चुका है। और शायद यही आधुनिक सशक्तिकरण की सबसे सशक्त परिभाषा है।

रायपुर की महापौर मीनल चौबे के अनुसार सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ है—अपने दायित्वों को ईमानदारी से निभाना और समाज के लिए समाधान बनना। और शायद यही वह विचार है जो आने वाले वर्षों में महिलाओं की भूमिका को और अधिक मजबूत करेगा।

Gen Z का दौर: साइबर चुनौतियाँ और महिला सशक्तिकरण की नई परिभाषा

समाज में परिवर्तन बहुत तेज़ी से आया है। जो बच्चे आज Gen-Z में हैं, उन्होंने वह संघर्ष नहीं देखा जो पहले की पीढ़ियों ने देखा था। उन्होंने संयुक्त परिवारों की वह संस्कृति भी कम देखी है जहाँ कई पीढ़ियाँ साथ रहती थीं और जीवन के अनुभव साझा होते थे। आज का बच्चा बचपन से ही मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में है। उसके हाथ में एक ऐसा उपकरण है जिसमें पूरी दुनिया मौजूद है। इसका असर उनकी सोच और व्यवहार पर साफ दिखता है।

डिजिटल युग में समाज की रफ्तार पहले से कहीं अधिक तेज़ हो गई है। वर्तमान की नई पीढ़ी मोबाइल और इंटरनेट के साथ बड़ी हुई है, इसलिए उसकी सोच, धैर्य और जीवन के प्रति दृष्टिकोण पहले की पीढ़ियों से अलग दिखाई देता है। इसी बदलाव के बीच साइबर अपराधों का बढ़ता खतरा, युवाओं की डिजिटल आदतें और महिला सशक्तिकरण की नई परिभाषा जैसे सवाल भी सामने खड़े हैं। इन्हीं मुद्दों पर **लाईफ वर्सिटी के संपादक नरेन्द्र पाण्डेय ने रायपुर की CPS (साइबर) अर्चना झा से विस्तार से बातचीत की।**

- *नरेन्द्र पाण्डेय - जेन-जी का दौर आ चुका है। आप दोनों पीढ़ियों—1997 से पहले और बाद की—में क्या बड़ा बदलाव देखती हैं?*
- **अर्चना झा**- समाज में परिवर्तन बहुत तेज़ी से आया है। जो बच्चे आज Gen-Z में हैं, उन्होंने वह संघर्ष नहीं देखा जो पहले की पीढ़ियों ने देखा था। उन्होंने संयुक्त परिवारों की वह संस्कृति भी कम देखी है जहाँ कई पीढ़ियाँ साथ रहती थीं और जीवन के अनुभव साझा होते थे। आज का बच्चा बचपन से ही मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में है। उसके हाथ में एक ऐसा उपकरण है जिसमें पूरी दुनिया मौजूद है। इसका असर उनकी सोच और व्यवहार पर साफ दिखता है।

नई पीढ़ी तेज़ है, सूचना तक उसकी पहुँच बहुत तेज़ है, लेकिन इसके साथ एक चुनौती भी है—पेशेंस यानी धैर्य कम होता जा रहा है। आज के बच्चे हर चीज़ का तुरंत परिणाम चाहते हैं। पहले बच्चे मैदान में खेलते थे। वहाँ जीत-हार दोनों मिलती थी। हारने की आदत भी पड़ती थी, और अपनी बारी का इंतज़ार करना भी सीखते थे। इससे जीवन के कई महत्वपूर्ण कौशल विकसित होते थे। लेकिन मोबाइल गेम्स में बच्चा हारते ही तुरंत रीस्टार्ट कर देता है। उसे हारने का अनुभव नहीं मिलता। इससे जीवन की जो प्राकृतिक सीख होती है, वह कहीं-न-कहीं सीमित हो जाती है।

- *नरेन्द्र पाण्डेय - डिजिटल दुनिया के बढ़ने के साथ साइबर क्राइम भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इसे आप कैसे देखती हैं?*
- **अर्चना झा**- साइबर अपराधों के बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है—हर हाथ में मोबाइल और हर काम का ऑनलाइन हो जाना। आज बैंकिंग, ट्रांजेक्शन, पहचान, दस्तावेज़—सब कुछ डिजिटल हो गया है। इसी का फायदा उठाकर अपराधी नए-नए तरीके निकालते हैं। आमतौर पर साइबर अपराध तीन प्रमुख तरीकों से किए जाते हैं—

डर पैदा करके - जैसे अचानक फोन आए कि आपके बच्चे का एक्सीडेंट हो गया या पुलिस ने पकड़ लिया है।

धोखे से -कोई अनजान लिंक भेजना, ओटीपी मांगना

या फर्जी वेबसाइट के जरिए जानकारी लेना।

लालच देकर - पैसे डबल करने की स्कीम, लॉटरी, विदेशी गिफ्ट या भारी रिटर्न का लालच।

इन तीन मनोवैज्ञानिक तरीकों—डर, धोखा और लालच—का उपयोग करके लोग फंसाए जाते हैं। अपराधी अक्सर सॉफ्ट टार्गेट चुनते हैं। इसमें पेंशनर्स, ग्रामीण लोग या वे लोग शामिल होते हैं जिनके खाते में पैसे हैं लेकिन डिजिटल जागरूकता कम है।

- *नरेन्द्र पाण्डेय - ऐसे साइबर अपराधों से बचने के लिए आम लोगों को क्या करना चाहिए?*
- **अर्चना झा**- सबसे महत्वपूर्ण है—सतर्कता और धैर्य। किसी भी संदिग्ध कॉल या मैसेज पर तुरंत प्रतिक्रिया न दें। हमेशा तीन बातें याद रखें— रुकिए -सोचिए - फिर एक्शन लीजिए। यदि कोई कहे कि आपका बच्चा संकट में है, तो घबराने के बजाय पहले अपने बच्चे या उसके दोस्तों से संपर्क करके सत्यापन कर लें। यदि कोई निवेश स्कीम आपको बहुत ज्यादा रिटर्न का लालच दे रही है, तो समझ लीजिए कि यह संभव नहीं है। बैंक या वैध निवेश में सीमित रिटर्न ही मिलता है।

अगर किसी के साथ साइबर फ्रॉड हो भी जाता है, तो घबराने की जरूरत नहीं है। तुरंत साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत करें या साइबर पोर्टल पर रिपोर्ट करें। समय पर शिकायत करने से कई मामलों में पैसे को होल्ड करके वापस दिलाया जा सकता है। रायपुर में हम 'संवाद से समाधान' जैसे जागरूकता कार्यक्रम चला रहे हैं। इसमें पुलिस अधिकारी कॉलोनियों, वार्डों और युवाओं के बीच जाकर लोगों को जागरूक कर रहे हैं।

- *नरेन्द्र पाण्डेय - अब बात करते हैं महिला सशक्तिकरण की। 1997 से पहले और आज के दौर में महिलाओं की स्थिति में क्या फर्क आया है?*
- **अर्चना झा**- पहले महिलाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी—शिक्षा और घर से बाहर निकलने का अवसर। कई ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल और कॉलेज दूर होते थे। परिवारों को सुरक्षा की चिंता रहती थी, इसलिए लड़कियों को पढ़ाई के लिए बाहर भेजना आसान नहीं था। इसके अलावा, सामाजिक सोच भी एक बाधा थी। कई जगहों पर यह माना जाता था कि शादी के बाद महिला का मुख्य काम घर और परिवार संभालना है। नौकरी करने के लिए भी कई बार परिवार से अनुमति लेना पड़ता था। लेकिन आज स्थिति बहुत बदली है। अब लगभग हर माता-पिता चाहते हैं कि उनकी बेटी अच्छी शिक्षा पाए और अपने पैरों पर खड़ी हो।

आज प्रतियोगी परीक्षाओं में, स्कूल-कॉलेज के परिणामों में, यहाँ तक कि UPSC जैसी परीक्षाओं में भी लड़कियाँ बड़ी संख्या में सफल हो रही हैं। कई जगह तो टॉपर्स की सूची में लड़कियों की संख्या अधिक दिखाई देती है। इससे स्पष्ट है कि अवसर मिलने पर महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

- *नरेन्द्र पाण्डेय - क्या आपको लगता है कि महिला सशक्तिकरण के साथ कुछ नई सामाजिक चुनौतियाँ भी आई हैं?*
- **अर्चना झा**- समाज में बदलाव हमेशा दो दिशाओं में होता है—सकारात्मक और नकारात्मक। जब लड़कियाँ हर क्षेत्र में आगे

> "समाज में जो बदलाव आता है, उसका असर लड़कों और लड़कियों दोनों पर पड़ता है। फिर भी एक बात स्पष्ट है— पहले की तुलना में आज महिलाओं के पास अवसर, शिक्षा और आत्मविश्वास कहीं अधिक है।"

बढ़ रही हैं, तो समाज के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी उन तक पहुँचते हैं। जैसे नशे को फैशन के रूप में लेना या सोशल मीडिया के प्रभाव में कुछ गलत प्रवृत्तियों की ओर जाना। लेकिन यह केवल महिलाओं की समस्या नहीं है। समाज में जो बदलाव आता है, उसका असर लड़कों और लड़कियों दोनों पर पड़ता है। फिर भी एक बात स्पष्ट है—पहले की तुलना में आज महिलाओं के पास अवसर, शिक्षा और आत्मविश्वास कहीं अधिक है।

- *नरेन्द्र पाण्डेय - आप आज के दौर में महिला सशक्तिकरण को कैसे परिभाषित करेंगी?*
- **अर्चना झा**- मेरे लिए महिला सशक्तिकरण का सबसे सही अर्थ है—आर्थिक और मानसिक आत्मनिर्भरता। पहले 'इंपावरमेंट' का मतलब सिर्फ अधिकारों की बात करना होता था। आज इसका मतलब है—स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और अपनी पहचान बनाना। जब एक महिला शिक्षित होती है, आर्थिक रूप से सक्षम होती है और अपने फैसले खुद ले सकती है—तभी वास्तविक सशक्तिकरण होता है।

डिजिटल युग ने अवसर भी दिए हैं और चुनौतियाँ भी। Gen-Z की तेज़ रफ्तार दुनिया, साइबर अपराधों का बढ़ता खतरा और महिलाओं की बदलती भूमिका—ये तीनों मिलकर आज के समाज की नई तस्वीर बना रहे हैं। लेकिन एक बात स्पष्ट है— जागरूकता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता ही इस बदलते समय में समाज की सबसे बड़ी ताकत बन सकती है।

महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए महिला कोष की योजनाओं का विस्तार जरूरी -मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े

महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि छत्तीसगढ़ में रोजगार और स्वरोजगार की अपार संभावनाएं हैं और महिला कोष की योजनाएं महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिविरों और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से अधिक से अधिक जरूरतमंद महिलाओं तक इन योजनाओं की जानकारी पहुंचाई जाए, ताकि वे इसका लाभ लेकर आत्मनिर्भर बन सकें।

मंत्री श्रीमती राजवाड़े अटल नगर, नवा रायपुर स्थित मंत्रालय में छत्तीसगढ़ महिला कोष के शासी बोर्ड एवं आमसभा की बैठक की अध्यक्षता कर रही थीं। बैठक में महिला कोष की विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 में ऋण योजना के तहत 1500 महिला स्व-सहायता समूहों को 30 करोड़ रुपये तथा सक्षम योजना के तहत 1000 पात्र महिलाओं को 14 करोड़ रुपये के ऋण वितरण की साख योजना के कार्योत्तर अनुमोदन एवं उपलब्धियों की जानकारी दी गई। साथ ही सक्षम योजना, ऋण योजना और स्वावलंबन योजना के लक्ष्यों एवं उपलब्धियों पर भी चर्चा की गई।

बैठक में यह जानकारी दी गई कि महिला स्व-सहायता समूहों को वर्तमान में द्वितीय बार अधिकतम 6 लाख रुपये तक ऋण दिए जाने का प्रावधान है। इसी प्रकार सक्षम योजना के अंतर्गत महिलाओं को अधिकतम 2 लाख रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है। इन प्रावधानों में आवश्यकता अनुसार संशोधन किए जाने के संबंध में भी विचार-विमर्श किया गया।

सितंबर 2025 की स्थिति में जिलों में कुल 8 लाख 2 हजार 843 रुपये की राशि ब्याज के रूप में जमा होने की जानकारी दी गई, जिसका उपयोग महिला कोष के सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए किए जाने पर विचार किया गया। बैठक में कार्यरत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं को भी पात्रता के आधार पर सक्षम योजना से लाभान्वित करने तथा योजना में महिलाओं की आयु सीमा 25 से 50 वर्ष करने के प्रस्ताव पर भी चर्चा हुई।

महिला एवं बाल विकास विभाग की संचालक शम्मी आबिदी ने बताया कि महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ महिला कोष का गठन किया गया है। इसके तहत महिलाओं को मात्र 3 प्रतिशत साधारण वार्षिक ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे वे स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय प्रारंभ कर आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं।

बैठक में महिला एवं बाल विकास, वाणिज्य एवं उद्योग, आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति विकास, समाज कल्याण, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, ग्रामोद्योग, कृषि, नगरीय प्रशासन, वन तथा कौशल विकास एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के प्रतिनिधियों के साथ ही नेहरू युवा केन्द्र, नाबार्ड, छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक, भारतीय स्टेट बैंक तथा यूनिसेफ के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना में छत्तीसगढ़ देश में अव्वल

महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण और सशक्तिकरण के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ ने एक और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उपलब्धि हासिल की है। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना (PMMVY) के क्रियान्वयन की फरवरी 2026 की स्टेट-वाइज राष्ट्रीय रैंकिंग में छत्तीसगढ़ ने बड़े राज्यों की श्रेणी में देश में पहला स्थान प्राप्त कर इतिहास रच दिया है। राज्य ने अन्य बड़े राज्यों को पीछे छोड़ते हुए यह उपलब्धि हासिल की है।

जारी रैंकिंग के अनुसार छत्तीसगढ़ ने 93.37 प्रतिशत नामांकन, 83.87 प्रतिशत स्वीकृति दर और 93.95 प्रतिशत शिकायतों के त्वरित समाधान के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। वहीं 30 दिनों से अधिक लंबित प्रकरणों की दर मात्र 7.07 प्रतिशत और लंबित शिकायत दर 4.96 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो योजना के प्रभावी और पारदर्शी क्रियान्वयन को दर्शाती है। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ ने पिछले माह की तुलना में 6 स्थानों की छलांग लगाकर पहला स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और मैदानी अमले को बधाई देते हुए कहा कि राज्य सरकार मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। छत्तीसगढ़ का प्रथम स्थान इस दिशा में किए जा रहे निरंतर प्रयासों का प्रमाण है।

महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को राज्य के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण बताते हुए विभागीय टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के कुशल मार्गदर्शन और दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही छत्तीसगढ़ आज देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हुआ है। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारियों-कर्मचारियों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के आपसी समन्वय, प्रतिबद्धता और समयबद्ध कार्यशैली के परिणामस्वरूप ही राज्य यह मुकाम हासिल कर पाया है।

महतारी वंदन योजना से मातृशक्ति को मिला आर्थिक संबल

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बस्तर के लाल बहादुर शास्त्री मिनी स्टेडियम में आयोजित वृहद महतारी वंदन सम्मेलन-2026 में प्रदेश की माताओं-बहनों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की मातृशक्ति समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने कहा कि महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण ही विकसित छत्तीसगढ़ की मजबूत नींव है और राज्य सरकार का हर निर्णय महिलाओं के कल्याण, सम्मान और आत्मनिर्भरता को केंद्र में रखकर लिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर महतारी वंदन योजना की 25वीं किश्त जारी करते हुए प्रदेश की 69 लाख 48 हजार महिलाओं के खातों में 641 करोड़ 58 लाख रुपये अंतरित किए। इसके साथ ही इस योजना के अंतर्गत अब तक महिलाओं को 16 हजार 237 करोड़ रुपये की राशि प्रदान की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि यह योजना केवल आर्थिक सहायता का माध्यम नहीं, बल्कि माताओं-बहनों के आत्मविश्वास, सम्मान और आत्मनिर्भरता को मजबूत करने वाला जनकल्याणकारी अभियान बन चुकी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्हें 10 मार्च 2024 का वह दिन याद है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महतारी वंदन योजना का शुभारंभ किया था। उसी समय यह संकल्प लिया गया था कि प्रदेश की प्रत्येक पात्र महिला के खाते में हर महीने निर्धारित तिथि पर एक हजार रुपये की राशि पहुंचेगी। पिछले 25 महीनों से यह संकल्प लगातार पूरा किया जा रहा है और इस किश्त के साथ अब तक प्रत्येक हितग्राही महिला को 25 हजार रुपये की राशि प्राप्त हो चुकी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने जो वादा किया था, उसे पूरी प्रतिबद्धता के साथ निभाया है।

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि महतारी वंदन योजना को निर्बाध रूप से जारी रखने के लिए राज्य सरकार ने इस वर्ष के बजट में 8 हजार 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि यह राशि माताओं-बहनों के जीवन में प्रत्यक्ष बदलाव ला रही है। महिलाएं इस सहायता का उपयोग बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य, घरेलू जरूरतों, बचत और स्वरोजगार जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में कर रही हैं। इससे परिवारों में आर्थिक स्थिरता बढ़ रही है और समाज के समग्र विकास को नई दिशा मिल रही है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रदेश की माताएं-बहनें केवल परिवार का संचालन ही नहीं करतीं, बल्कि वे उत्कृष्ट वित्तीय प्रबंधक भी होती हैं। उन्होंने कहा कि महतारी वंदन योजना से प्राप्त राशि का महिलाओं ने अत्यंत समझदारी से उपयोग किया है। किसी ने बेटियों के भविष्य के लिए बचत की, किसी ने स्वरोजगार शुरू किया, किसी ने परिवार के छोटे व्यवसाय को बढ़ाया, तो किसी ने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च कर घर की स्थिति को मजबूत बनाया। यह इस योजना की सबसे बड़ी सफलता है कि महिलाओं ने इसे स्वयं और परिवार की उन्नति का माध्यम बनाया।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दृढ़ संकल्प तथा सुरक्षा बलों के अदम्य साहस से नक्सलवाद अब अंतिम चरण में पहुंच चुका है। नक्सल हिंसा से प्रभावित परिवारों और आत्मसमर्पित नक्सलियों के पुनर्वास के लिए राज्य सरकार ने 15 हजार आवास स्वीकृत किए हैं। उन्होंने कहा कि बस्तर सहित दूरस्थ अंचलों में शांति, विकास और विश्वास का नया वातावरण बन रहा है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के सम्मान और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकार अनेक स्तरों पर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए राज्य सरकार लगातार पहल कर रही है। प्रदेश में अब तक 8 लाख महिलाओं को 'लखपति दीदी' बनाया जा चुका है और अब सरकार का लक्ष्य इसे बढ़ाकर 10 लाख लखपति दीदी बनाने का है। उन्होंने कहा कि महिलाएं अब केवल सहभागी नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नई नेतृत्वकारी शक्ति बनकर उभर रही हैं। इसी दिशा में महिला स्वसहायता समूहों के माध्यम से रेडी टू ईट फूड निर्माण का कार्य पुनः प्रारंभ कराया गया है और इसे चरणबद्ध रूप से प्रदेश के शेष जिलों में भी लागू किया जा रहा है, ताकि स्थानीय स्तर पर महिलाओं को व्यापक रोजगार के अवसर मिल सकें।

कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सरकार गठन के तुरंत बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी को लागू करने की दिशा में गंभीरता से कार्य किया गया और उसी क्रम में महतारी वंदन योजना शुरू की गई। उन्होंने कहा कि इस योजना से राज्य की लगभग 70 लाख माताएं-बहनें लाभान्वित हो रही हैं। यह योजना महिलाओं को घरेलू जरूरतों की पूर्ति के साथ आर्थिक संबल भी प्रदान कर रही है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार छत्तीसगढ़ महिला कोष तथा सक्षम योजना के माध्यम से भी महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने में सहयोग दे रही है।

महिला सशक्तिकरण के नवयुग की ओर अग्रसर छत्तीसगढ़

डॉ. दानेश्वरी संभाकर
उप संचालक, जनसंपर्क विभाग

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ आज महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है। मातृशक्ति के सम्मान, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार ने इस वर्ष को 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की है। यह पहल केवल एक औपचारिक घोषणा नहीं है, बल्कि महिलाओं को राज्य की विकास यात्रा के केंद्र में स्थापित करने का सशक्त संकल्प है।

विश्वास से निर्माण और अब गौरव की ओर

मुख्यमंत्री साय ने अपने कार्यकाल के पहले वर्ष को 'विश्वास वर्ष' के रूप में शासन-प्रशासन और जनता के बीच भरोसे की पुनर्स्थापना को समर्पित किया। इसके बाद दूसरे वर्ष को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में 'अटल निर्माण वर्ष' के रूप में मनाते हुए अधोसंरचना विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं को नई गति दी गई। अब तीसरा वर्ष 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में माताओं और बहनों को समर्पित किया गया है, जिसमें राज्य की अधिकांश योजनाओं का केंद्रबिंदु महिलाएं होंगी। यह क्रम सरकार की संवेदनशील और समावेशी विकास की सोच को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

महतारी वंदन योजना – आत्मसम्मान और आर्थिक सुरक्षा का आधार

छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी वंदन योजना आज महिला सशक्तिकरण का मजबूत स्तंभ बन चुकी है। इस योजना के तहत प्रदेश की लगभग 70 लाख विवाहित महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपये की सहायता सीधे उनके बैंक खातों में प्रदान की जा रही है। अब तक 16 हजार 237 करोड़ रुपये से अधिक की राशि डीबीटी के माध्यम से महिलाओं को दी जा चुकी है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन 25 वीं किस्त के रूप में 68 लाख से अधिक महिलाओं को 641 करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गई यह नियमित आर्थिक सहयोग महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ ही उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। कई महिलाएं इस राशि को केवल घरेलू खर्च तक सीमित न रखकर स्वरोजगार और छोटे व्यवसायों में निवेश कर रही हैं।

संघर्ष से स्वावलंबन तक - रोहनी पटेल की प्रेरक कहानी

बालोद जिले के ग्राम खैरडीह की रोहनी पटेल इसका एक प्रेरणादायक उदाहरण हैं। पति की असमय मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई थी। घर में वृद्ध सास की देखभाल और कॉलेज में पढ़ रहे दो बच्चों की पढ़ाई की चिंता उनके लिए बड़ी चुनौती थी ऐसे कठिन समय में महतारी वंदन योजना उनके लिए उम्मीद की किरण बनकर आई। योजना से मिलने वाली राशि को उन्होंने सावधानीपूर्वक बचत कर अपने खेत में सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू किया। बीज, खाद और कृषि सामग्री की व्यवस्था कर उन्होंने पूरी मेहनत से खेती की।

आज रोहनी पटेल अपने खेत में उगाई गई ताजी सब्जियों को स्थानीय बाजारों में बेचकर नियमित आय अर्जित कर रही हैं। इस आय से वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा कर रही हैं और बच्चों की पढ़ाई भी निर्बाध रूप से जारी है। उनका यह प्रयास गांव की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन चुका है।

बिहान से बदली जिंदगी - 'लखपति दीदी' बनी श्रीमती माहेश्वरी यादव

बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के ग्राम कोरदा की माहेश्वरी यादव भी महिला

सशक्तिकरण की एक प्रेरक मिसाल हैं। पहले उनका जीवन सामान्य गृहिणी की तरह घर-परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित था। लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन 'बिहान' से जुड़ने के बाद उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया।

समूह के सहयोग और परिवार के समर्थन से उन्होंने गांव में एक छोटी किराना दुकान शुरू की। अपनी मेहनत और बेहतर प्रबंधन के बल पर यह दुकान धीरे-धीरे गांव में भरोसेमंद केंद्र बन गई। आज इस दुकान से उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 1 से 1.5 लाख रुपये की आय हो रही है और वे 'लखपति दीदी' बन चुकी हैं। इससे उनके बच्चों की शिक्षा और परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

आधुनिक तकनीक से नई पहचान - 'ड्रोन दीदी' सुसीमा वर्मा

बिलासपुर जिले के मस्तूरी क्षेत्र की सीमा

वर्मा ने भी यह साबित किया है कि अवसर और प्रशिक्षण मिलने पर महिलाएं आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में भी नई पहचान बना सकती हैं।

स्व-सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने पहले मशरूम उत्पादन का कार्य शुरू किया और बाद में ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शासन की सहायता से उन्हें ड्रोन सेट, जनरेटर और ई-वाहन उपलब्ध कराया गया।

आज सीमा वर्मा किसानों के खेतों में ड्रोन के माध्यम से कीटनाशक छिड़काव कर रही हैं और इस कार्य से उन्हें सम्मानजनक आय प्राप्त हो रही है। गांव में लोग उन्हें स्नेहपूर्वक 'ड्रोन दीदी' के नाम से जानते हैं।

बजट में महिला कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता

राज्य सरकार ने महिला एवं बाल विकास विभाग के लिए 8 हजार 245 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया है।

आंगनबाड़ी एवं पोषण योजनाओं के लिए 2 हजार 320 करोड़ रुपये, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लिए 120 करोड़ रुपये, मिशन वात्सल्य के लिए 80 करोड़ रुपये तथा रानी दुर्गावती योजना के लिए 15 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

इसके अतिरिक्त 750 नए आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण के लिए 42 करोड़ रुपये और 250 महतारी सदनों के निर्माण के लिए 75 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। यह बजटीय प्रावधान महिलाओं और बच्चों के समग्र विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सुरक्षा, स्वास्थ्य और गरिमा की सुदृढ़ व्यवस्था

महिला सुरक्षा के क्षेत्र में भी राज्य ने प्रभावी तंत्र विकसित किया है। वन स्टॉप सेंटर, 181 महिला हेल्पलाइन और डायल 112 के माध्यम से संकट की स्थिति में त्वरित सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। सुखद सहारा योजना के अंतर्गत 2 लाख 18 हजार से अधिक विधवा एवं परित्यक्ता महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

स्वावलंबन से नेतृत्व तक

प्रदेश में 42 हजार से अधिक महिला स्व-सहायता समूहों को रियायतीऋण प्रदान कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाया गया है। रेडी-टू-ईट कार्य महिला समूहों को सौंपे जाने से उन्हें स्थायी आय का स्रोत मिला है। इसके साथ ही डिजिटल सखी, दीदी ई-रिक्शा, सिलाई मशीन सहायता, मिनीमाता महतारी जतन योजना और लखपति दीदी जैसी पहलें महिलाओं को नए आजीविका अवसर प्रदान कर रही हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के अनुसार महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें सुरक्षित तथा सम्मानजनक वातावरण प्रदान करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

विकसित छत्तीसगढ़ की सशक्त आधारशिला

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने स्पष्ट किया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के लक्ष्य के अनुरूप 'छत्तीसगढ़ अंजोर विजन 2047' के माध्यम से राज्य को समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है, जिसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को अनिवार्य तत्व माना गया है।

'महतारी गौरव वर्ष' केवल एक प्रशासनिक पहल नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का व्यापक अभियान है। यह वर्ष छत्तीसगढ़ में मातृशक्ति के सम्मान, आत्मविश्वास और नेतृत्व को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प लेकर आया है। आज प्रदेश की महिलाएं आत्मनिर्भरता, नवाचार और नेतृत्व के साथ विकास की नई कहानी लिख रही हैं। यही सशक्त मातृशक्ति विकसित और समृद्ध छत्तीसगढ़ की सबसे मजबूत आधारशिला बनेगी।

बाल अधिकारों की लड़ाई जागरूक समाज की जरूरत

डॉ. वर्णिका शर्मा

बच्चे किसी भी समाज और राष्ट्र का भविष्य होते हैं। लेकिन कई बार वही बचपन शोषण, बालश्रम, नशे और डिजिटल खतरों के बीच घिर जाता है। ऐसे समय में बच्चों के अधिकारों और उनके संरक्षण की जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। आज जब समाज तेजी से बदल रहा है, तब बच्चों की सुरक्षा, अधिकार और भविष्य को लेकर नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रही हैं, विशेष रूप से दूरस्थ वनांचल और संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में। आयोग की जिम्मेदारी संभालने के बाद उन्होंने बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा और जागरूकता को लेकर कई पहल शुरू की हैं। इन्हीं मुद्दों पर उनसे लाईफ वर्सिटी के संपादक नरेन्द्र पाण्डेय से विस्तृत बातचीत हुई . उन्होंने न केवल अपने अनुभव साझा किए, बल्कि यह भी बताया कि बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए समाज, परिवार और शासन को मिलकर काम करना होगा।

> “कई बार हम देखते हैं कि जिन बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, वे काम करते दिखाई देते हैं। इससे भी अधिक चिंता तब होती है जब बच्चे नशे के संपर्क में आते हैं।”

- *नरेन्द्र – बाल संरक्षण आयोग बच्चों के अधिकारों के लिए काम करता है, लेकिन जागरूकता की कमी अब भी बड़ी चुनौती है। इस जिम्मेदारी को आप किस रूप में देखती हैं?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि से काम करता है, तो चुनौतियाँ भी उसे कठिन नहीं लगतीं। मेरे लिए भी यह कार्य बोझ नहीं है, बल्कि एक संकल्प है। लंबे समय तक मैं वनांचल क्षेत्रों में गई, आदिवासी परिवारों के बीच रही और वहाँ बच्चों की स्थिति को बहुत करीब से देखा। उन क्षेत्रों में सबसे अधिक चिंता बच्चों को लेकर ही थी। कई बच्चे शिक्षा से वंचित थे, कई अपने अधिकारों से अनजान थे। उसी समय मन में यह भावना आई कि बच्चों के लिए कुछ करना चाहिए। शायद उसी भावना का परिणाम है कि आज मुझे यह जिम्मेदारी मिली है।
- *नरेन्द्र -आपने बस्तर और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी काफी काम किया है। वहाँ बच्चों की स्थिति कितनी चुनौतीपूर्ण रही है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- बस्तर मेरे लिए केवल एक क्षेत्र नहीं है, वह मेरे लिए मायके जैसा है। मैंने वहाँ के लोगों के बीच रहकर काम किया है। एक समय था जब नक्सल हिंसा का असर बहुत गहरा था। उस दौर में कई बच्चों

का बचपन प्रभावित हुआ। शिक्षा बाधित हुई, भय का वातावरण बना रहा। लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं और उम्मीद की एक नई किरण दिखाई दे रही है। मेरा मानना है कि हर अंधेरे के बाद एक उजाला अवश्य आता है। आज बस्तर भी उसी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

- *नरेन्द्र - इन क्षेत्रों में बच्चों तक पहुँचने के लिए आयोग क्या कर रहा है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- हमने कई पहल शुरू की हैं। उनमें से एक महत्वपूर्ण पहल है बाल चौपाल। बाल चौपाल के माध्यम से हम गाँव-गाँव जाकर बच्चों से सीधे संवाद करते हैं। वहाँ बच्चे खुलकर अपनी समस्याएँ बताते हैं। कई बार हम उनकी स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक माध्यमों से संवाद करते हैं ताकि वे सहज महसूस करें। इसके अलावा 'सशक्त पालक समृद्ध प्रदेश' और 'मोर मयारू गुरुजी' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से भी बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों को जागरूक किया जा रहा है।
- **नरेन्द्र - आज भी बाल श्रम और नशे की समस्या दिखाई देती है। इसे आप किस तरह देखती हैं?**
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- यह बहुत गंभीर विषय है। कई बार हम देखते हैं कि जिन बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, वे काम करते दिखाई देते हैं। इससे भी अधिक चिंता तब होती है जब बच्चे नशे के संपर्क में आते हैं। कुछ जगहों पर ऐसा भी देखा गया कि माता-पिता ही बच्चों से नशे की सामग्री मंगवा लेते हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। मैं सभी लोगों से कहना चाहती हूँ कि बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का शोषण या नशे से जुड़ा अपराध गंभीर दंडनीय अपराध है। इसके लिए सात वर्ष तक की सजा और एक लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।यदि कहीं ऐसी स्थिति दिखे तो तुरंत 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन पर सूचना दी जानी चाहिए।
- *नरेन्द्र - शहरों में कई बच्चे रेलवे स्टेशन या सड़कों पर दिखाई देते हैं। उनके लिए क्या व्यवस्था है? कई बार बच्चों का इस्तेमाल अपराधों में भी किया जाता है। इस स्थिति में आयोग की भूमिका क्या होती है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- ऐसे बच्चों को हम देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चे कहते हैं। यदि किसी बच्चे के

पास परिवार नहीं है या वह असुरक्षित स्थिति में है, तो उसे रेस्क्यू करके बाल गृह या बालिका गृह में रखा जाता है। सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन्हें शिक्षा, सुरक्षा और पुनर्वास की सुविधा दी जाती है। हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है—बच्चे अपराधी नहीं होते, वे परिस्थितियों के शिकार होते हैं। ऐसे बच्चों को हम 'कानून से संघर्षरत बच्चे' कहते हैं। उन्हें जेल नहीं भेजा जाता, बल्कि सुधारात्मक संस्थानों में रखा जाता है जहाँ उन्हें शिक्षा, परामर्श और मार्गदर्शन दिया जाता है। हमारा उद्देश्य उन्हें दंड देना नहीं बल्कि उन्हें सही दिशा देना है।

- *नरेन्द्र - आजकल साइबर अपराध और ऑनलाइन गेम्स भी बच्चों को प्रभावित कर रहे हैं। इस पर आपकी क्या राय है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- यह एक नई और गंभीर चुनौती है। आज बच्चों के पास मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया खुली हुई है। आज का बच्चा तकनीकी रूप से बहुत आगे है, लेकिन इसके साथ कई जोखिम भी जुड़े हैं। मोबाइल और इंटरनेट के कारण बच्चे कई बार मानसिक दबाव में आ जाते हैं। जब बच्चे अकेलेपन में होते हैं और उन्हें सही मार्गदर्शन नहीं मिलता, तो वे ऑनलाइन दुनिया में उत्तर खोजने लगते हैं। इसी दौरान कई बार गलत लोग उनका फायदा उठा लेते हैं। इसलिए माता-पिता को बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए। जिस 'मी-टाइम' की बात होती है, उसे 'वी-टाइम' में बदलने की जरूरत है।
- *नरेन्द-बच्चों तक संदेश पहुँचाने के लिए आयोग क्या नए प्रयोग कर रहा है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- हमने बच्चों के लिए दो कार्टून पात्र तैयार किए हैं — गिन्नी और बिन्नी। इनके माध्यम से कॉमिक्स और डिजिटल सामग्री बनाई जा रही है।आने वाले समय में चौक-चौराहों और डिजिटल स्क्रीन पर भी इनके माध्यम से बाल अधिकार और सुरक्षा से जुड़े संदेश दिखाए जाएंगे।
- *नरेन्द्र - बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में आपको क्या सुधार जरूरी लगता है?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- शिक्षा का अधिकार केवल किताबें पढ़ाने तक सीमित नहीं होना चाहिए। बच्चों को अच्छा वातावरण, खेल का मैदान, प्रयोगशाला और बुनियादी सुविधाएँ भी मिलनी चाहिए। यदि स्कूल में ब्लैकबोर्ड, पानी, खेल सामग्री और लैब नहीं है, तो केवल सैद्धांतिक शिक्षा से बच्चों का पूर्ण विकास संभव नहीं है।
- *नरेन्द्र - आयोग की आने वाली प्राथमिकताएँ क्या हैं?*
- **डॉ. वर्णिका शर्मा**- हमने छह विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर एक विशेष डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया है — पीजीडीटीसीआर (PGDTCR)। यह बाल अधिकार और संरक्षण पर आधारित एक वर्षीय पाठ्यक्रम है। इसमें समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, पत्रकारिता और सामाजिक कार्य जैसे विषयों के माध्यम से बच्चों के अधिकारों की गहन समझ विकसित की जाएगी। हम चाहते हैं कि समाज का हर वर्ग बच्चों के अधिकारों के प्रति संवेदनशील बने।

डॉ. वर्णिका शर्मा का मानना है कि बच्चों का संरक्षण केवल सरकार या आयोग की जिम्मेदारी नहीं है। यह समाज, परिवार और प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है। यदि हम अपने बच्चों को सुरक्षित, शिक्षित और संस्कारित वातावरण दे पाए, तो वही बच्चे भविष्य में एक सशक्त और संवेदनशील भारत का निर्माण करेंगे।

एक पीढ़ी ने सहा, दूसरी ने कहा – अब बस!

रायपुर का एक शांत-सा मोहल्ला। सुबह का समय था। सड़क किनारे लगे अमलतास के पेड़ों से पीले फूल झर रहे थे। कॉलेज जाने वाली लड़कियों का एक छोटा-सा समूह गेट के बाहर खड़ा था। कंधे पर बैग था और हाथ में मोबाइल। लेकिन उनकी चर्चा किसी इंस्टाग्राम या रील्स की नहीं थी।

बीच में खड़ी थी आन्या — तेज़ आँखें, चेहरे पर आत्मविश्वास और आवाज़ में अजीब-सी साफ़गोई।

कॉलेज के गेट के पास एक बड़ा पोस्टर लगा था — 'महिला सशक्तिकरण सेमिनार'

आन्या उस पोस्टर को कुछ देर तक देखती रही, फिर हल्के से मुस्कुरा दी।

उसकी दोस्त ने पूछा —

'क्या हुआ? इसमें हँसने वाली क्या बात है?'

आन्या बोली —'बस अजीब लगता है, जब लोग महिला सशक्तिकरण को अभी भी एक कार्यक्रम समझते हैं। हमारे लिए तो यह सामान्य जीवन होना चाहिए।'

दोस्तों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

शायद वे पहली बार इस बात को इस तरह सोच रही थीं।

आन्या का परिवार साधारण था। पिता एक प्रायवेट संस्थान में नौकरी करते थे और माँ एक गृहणी। घर में संस्कार भी थे और परंपराएँ भी।

दादी अक्सर कहा करती थीं —

> **'माँ, मैं सिर्फ नौकरी नहीं करना चाहती, मैं कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिससे समाज में फर्क पड़े।' माँ ने उसे ध्यान से देखा। कुछ पल के लिए उनके चेहरे पर गर्व भी था और चिंता भी। उन्होंने धीरे से कहा– 'फर्क तो हम भी लाना चाहते थे, लेकिन हमारे समय में जिम्मेदारियाँ पहले आ जाती थीं।'**

'लड़कियों को ज्यादा बहस नहीं करनी चाहिए।'

आन्या बचपन से सवाल पूछने वाली लड़की थी।

एक दिन उसने दादी से पूछा —

'दादी, अगर दुर्गा देवी युद्ध कर सकती हैं, अगर सीता जंगल जा सकती हैं, तो आज की लड़की अपने सपनों के लिए क्यों नहीं लड़ सकती?'

दादी कुछ पल के लिए चुप रह गईं।

फिर मुस्कुरा दीं।

उस दिन पहली बार घर में यह एहसास हुआ कि यह लड़की सिर्फ पढ़ने नहीं आई है, यह सोच बदलने आई है।

आन्या सिर्फ किताबों में नहीं जीती थी।

उसे टेक्नोलॉजी पसंद थी। वह कोडिंग सीख रही थी। साइबर सिक्योरिटी पर वीडियो देखती थी और सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़ को चुनौती देती थी। उसके लिए सशक्तिकरण का मतलब सिर्फ नारा नहीं था। उसका मतलब था —

आर्थिक आत्मनिर्भरता

डिजिटल जागरूकता

मानसिक मजबूती
और अपनी पहचान खुद तय करना

कॉलेज में एक दिन साइबर क्राइम पर वर्कशॉप चल रही थी। तभी एक लड़की रोते हुए आई। किसी ने उसकी तस्वीर से नकली प्रोफाइल बना दी थी और उसे परेशान किया जा रहा था।

लोग सलाह दे रहे थे — 'इग्नोर करो,' 'सोशल मीडिया छोड़ दो',

आन्या ने धीरे से कहा — 'गलती उसकी है जिसने अपराध किया है, तुम क्यों पीछे हटो?'

उसने उस लड़की को ऑनलाइन शिकायत करना सिखाया। कुछ ही दिनों में आरोपी पकड़ा गया। उस दिन कई लड़कियों को पहली बार समझ आया — सशक्तिकरण भाषण से नहीं, कार्रवाई से आता है।

सुबह का समय था । रसोई से चाय की खुशबू पूरे घर में फैल रही थी। आन्या अपने लैपटॉप पर कुछ लिख रही थी। शायद कॉलेज में होने वाले 'महिला सशक्तिकरण' सेमिनार के लिए नोट्स तैयार कर रही थी। तभी उसकी माँ ने रसोई से आवाज़ दी— 'आन्या, पहले नाश्ता कर लो, फिर दुनिया बदलना।' आन्या मुस्कुरा दी। वह अपनी माँ को देखती थी और कई बार सोचती थी — हम दोनों एक ही घर में रहते हैं, लेकिन हमारी दुनिया कितनी अलग है।

आन्या की माँ, सुमन, पढ़ी-लिखी, समझदार और शांत स्वभाव की। लेकिन उनकी जिंदगी का रास्ता अलग था। उन्होंने कभी अपने सपनों को बहुत जोर से नहीं बोला। कॉलेज में पढ़ाई अच्छी थी, लेकिन शादी जल्दी हो गई। फिर घर, परिवार — यही जीवन बन गया। चाय पीते हुए उन्होंने आन्या से कहा— 'हमारे समय में लड़कियाँ ज्यादा सवाल नहीं करती थीं। जो रास्ता मिल जाता था, उसी पर चलना सीख लेते थे।' आन्या ने तुरंत कहा— 'लेकिन माँ, अगर रास्ता गलत हो तो?' सुमन हल्के से मुस्कुराईं— 'तब भी कई लोग उसी पर चलते रहते थे, क्योंकि दूसरा रास्ता देखने की हिम्मत कम लोगों में होती थी।'

आन्या बोली- 'माँ, मैं सिर्फ नौकरी नहीं करना चाहती, मैं कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिससे समाज में फर्क पड़े।' माँ ने उसे ध्यान से देखा। कुछ पल के लिए उनके चेहरे पर गर्व भी था और चिंता भी। उन्होंने धीरे से कहा— 'फर्क तो हम भी लाना चाहते थे, लेकिन हमारे समय में जिम्मेदारियाँ पहले आ जाती थीं।'

शाम दोनों छत पर बैठी थीं। आन्या ने पूछा— 'माँ, आपको कभी लगा कि आप और ज्यादा कर सकती थीं?'

सुमन ने आसमान की तरफ देखा। फिर बोलीं—लेकिन हमने समझौता करना सीख लिया था। तुम लोगों की पीढ़ी समझौता कम करती है। आन्या हँसते हुए बोली—'हम समझौता नहीं, संतुलन ढूँढने की कोशिश करते हैं।'

माँ के लिए सशक्तिकरण का मतलब था—

परिवार को संभालना, शिक्षा देना, कठिन परिस्थितियों में भी मजबूत रहना

आन्या के लिए सशक्तिकरण का मतलब था—

अपनी पहचान बनाना
अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना
और समाज में बदलाव लाना

दोनों की परिभाषाएँ अलग थीं,
लेकिन उद्देश्य एक ही था।

लेकिन हर बदलाव के साथ विरोध भी आता है। मोहल्ले के कुछ लोग एक दिन उसके पिता से बोले — 'आपकी बेटी बहुत एक्टिव रहती है, लड़कियों को इतना आगे नहीं आना चाहिए।'

पिता कुछ देर तक चुप रहे। फिर शांत आवाज़ में बोले —'अगर मेरी बेटी गलत के खिलाफ आवाज़ उठाती है, तो मुझे उस पर गर्व है।'

आन्या दरवाज़े के पीछे खड़ी सब सुन रही थी।

उसकी आँखें भर आईं।

उसे समझ आया — सशक्तिकरण सिर्फ लड़की की लड़ाई नहीं होता, यह पूरे परिवार की हिम्मत से बनता है।

कुछ महीनों बाद कॉलेज में वही 'महिला सशक्तिकरण सेमिनार' आयोजित हुआ। इस बार मंच पर बड़े नेता या अधिकारी नहीं थे।

छात्रों ने तय किया — इस बार मंच पर कोई ऐसा बोलेगा जो इस विषय को जीता हो। और सबकी निगाहें एक ही नाम पर आकर रुकीं — आन्या।

माइक उसके हाथ में था। हॉल में सैकड़ों छात्र बैठे थे। आन्या ने धीरे से बोलना शुरू किया — 'हमारी पीढ़ी आज जो भी कर पा रही है, वह हमारी माँओं की वजह से है। उन्होंने अपने सपनों का कुछ हिस्सा छोड़कर हमें उड़ने की जगह दी।' महिला सशक्तिकरण कोई आंदोलन नहीं है, यह समाज का संतुलन है। जब लड़कियाँ मजबूत होंगी, तो परिवार मजबूत होगा, समाज मजबूत होगा और देश भी मजबूत होगा।

कुछ पल के लिए पूरा हॉल शांत हो गया। फिर अचानक तालियों की आवाज़ गूंज उठी। सुमन की आँखें भर आईं। उन्हें पहली बार महसूस हुआ कि पीढ़ियों का फर्क दूरी नहीं होता, वह एक पुल भी बन सकता है।

उस दिन के बाद आन्या सिर्फ एक छात्रा नहीं रही। वह एक प्रतीक बन गई — उस नई पीढ़ी का प्रतीक जो सवाल पूछने से डरती नहीं। Gen-Z की लड़कियाँ अनुमति नहीं मांग रही हैं। वे अपने लिए जगह नहीं खोज रहीं वे नई जगह बना रही हैं। और शायद यही वजह है कि आज की लड़की सिर्फ इतिहास नहीं पढ़ रही — वह भविष्य लिख रही है।

संकल्प का बजट

इरादों से परिणाम तक की चुनौती

जब कोई सरकार अपने तीसरे बजट को 'संकल्प' कहती है, तो वह सिर्फ एक शब्द नहीं चुनती, वह अपने राजनीतिक इरादे की दिशा तय करती है। ज्ञान से शुरुआत हुई थी, गति से रफ्तार दिखाई गई, और अब बात संकल्प की है। यानी ठहरकर सोचने की नहीं, ठानकर करने की मुद्रा। संकल्प, सात अक्षरों का यह शब्द इस बार पूरे बजट का दर्शन बन गया है।

- **समावेशी विकास** — यानी विकास का लाभ केवल शहरों तक सीमित न रहे, गांव और वनांचल भी उसका हिस्सा बनें।
- **अधोसंरचना** — सड़क, पुल, अस्पताल, स्कूल, डिजिटल नेटवर्क्स विकास की रीढ़।
- **निवेश** — निजी और सार्वजनिक पूंजी, जो रोजगार का रास्ता खोलती है।
- **कुशल मानव संसाधन** — यानी केवल डिग्री नहीं, दक्षता।
- **अंत्योदय** — सबसे अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंच।
- **लाइवलीहुड** — रोजगार, आजीविका, आत्मनिर्भरता।
- और अंत में **पॉलिसी से परिणाम** — नीति का मूल्य तभी है, जब वह जमीन पर असर दिखाए।

छत्तीसगढ़ विधानसभा में 24 फरवरी को जब वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने 1 लाख 72 हजार करोड़ रुपये का बजट पेश किया, तो यह केवल आय-व्यय का लेखा-जोखा नहीं था। यह एक राजनीतिक घोषणा-पत्र की तरह था, एक संदेश था कि साय सरकार अपने तीसरे वर्ष में किस दिशा में राज्य को ले जाना चाहती है। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने इसे 'सुशासन से समृद्धि' की दिशा में निर्णायक कदम बताया। विधानसभा की

यदि समावेशी विकास सच में लागू होता है, तो यह बजट सामाजिक संतुलन की नई इबारत लिख सकता है। यदि अधोसंरचना निवेश रोजगार में बदलता है, तो यह आर्थिक छलांग साबित हो सकता है। यदि अंत्योदय केवल भाषण में नहीं, बजट आवंटन में दिखे, तो संकल्प सार्थक होगा।

सीढ़ियों पर माथा टेककर उन्होंने बजट पेश किया — यह दृश्य प्रतीकात्मक था, जैसे सरकार यह जताना चाहती हो कि यह केवल अर्थशास्त्र नहीं, आस्था और उत्तरदायित्व का विषय भी है। लेकिन लोकतंत्र में हर दस्तावेज़ की दो परतें होती हैं — एक सरकारी प्रस्तुति, दूसरी विपक्ष की प्रतिक्रिया। और इन दोनों के बीच छिपी होती है जनता की अपेक्षा। यह बजट भी इसी त्रिकोण के भीतर खड़ा है।राज्य निर्माण के समय जब छत्तीसगढ़ का बजट महज 5 हजार करोड़ था, तब संसाधन सीमित थे, अपेक्षाएं अनंत थीं। आज वही बजट 35 गुना बढ़कर 1 लाख 72 हजार करोड़ तक पहुंच गया है। यह केवल आंकड़ों की वृद्धि नहीं, यह राज्य की आर्थिक यात्रा का दस्तावेज़ है।

पर सवाल यह है कि क्या राशि का विस्तार ही विकास है?

आर्थिक आकार बढ़ना एक उपलब्धि है, पर विकास की असली कसौटी वितरण है — पैसा कहां जा रहा है, किसके जीवन में बदलाव ला रहा है, किस क्षेत्र को प्राथमिकता मिल रही है।

यदि समावेशी विकास सच में लागू होता है, तो यह बजट सामाजिक संतुलन की नई इबारत लिख सकता है। यदि अधोसंरचना निवेश रोजगार में बदलता है, तो यह आर्थिक छलांग साबित हो सकता है। यदि अंत्योदय केवल भाषण में नहीं, बजट आवंटन में दिखे, तो संकल्प सार्थक होगा।

क्योंकि जनता अब आंकड़ों से प्रभावित नहीं होती, वह असर देखती है। सड़क बनी या नहीं? अस्पताल में डॉक्टर है या नहीं? युवा को नौकरी मिली या नहीं? किसान को लाभ मिला या नहीं?

संकल्प शब्द में दृढ़ता है, पर परिणाम में विश्वसनीयता होती है।

इस पूरे बजट को समझने के लिए हमें इसे दस आयामों में देखना होगा — थीम, क्षेत्रीय संतुलन, सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, अधोसंरचना, रोजगार, राजनीतिक प्रतिक्रिया और अंतत: उसके क्रियान्वयन की चुनौती।

छत्तीसगढ़ राज्य बनने के समय 5 हजार करोड़ का बजट था। आज वह 35 गुना बढ़कर 1.72 लाख करोड़ पहुंच गया है। यह वृद्धि केवल संख्यात्मक नहीं, बल्कि राज्य की आर्थिक क्षमता और राजस्व विस्तार का संकेत है। लेकिन प्रश्न यह है कि बजट का आकार बढ़ना क्या विकास का प्रमाण है?

विकास तब प्रमाणित होता है जब —

- **प्रति व्यक्ति आय बढ़े,**
- **बेरोजगारी घटे,**
- **स्वास्थ्य और शिक्षा की गुणवत्ता सुधरे,**
- **और क्षेत्रीय असमानता कम हो।**

इस बजट में सरकार ने इन सभी पहलुओं को छूने का प्रयास किया है। लेकिन छूना और सुलझाना — दोनों में फर्क है।

साय सरकार का यह तीसरा बजट है। पहले 'ज्ञान', फिर 'गति' और अब 'संकल्प'। यह थीम आधारित प्रस्तुति बताती है कि सरकार बजट को केवल वित्तीय दस्तावेज़ नहीं, बल्कि विचारधारा का विस्तार बनाना चाहती है।

S – समावेशी विकास
A – अधोसंरचना
N – निवेश
K – कुशल मानव संसाधन
A – अंत्योदय
L – लाइवलीहुड
P – पॉलिसी से परिणाम

यह संरचना प्रभावशाली लगती है। लेकिन लोकतंत्र में हर शब्द की कसौटी ज़मीन होती है।

- **समावेशी विकास का अर्थ** — क्या आदिवासी अंचलों की वास्तविक भागीदारी?
- **अधोसंरचना** — क्या केवल सड़कों और पुलों तक सीमित?
- **निवेश** — क्या स्थानीय रोजगार सृजन से जुड़ा?
- **कुशल मानव संसाधन** — क्या स्किलिंग और उद्योग का समन्वय?
- **अंत्योदय** — क्या अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं की पहुंच?
- **लाइवलीहुड** — क्या ग्रामीण आय में वृद्धि?
- **पॉलिसी से परिणाम** — क्या पारदर्शी मॉनिटरिंग?

यही वे प्रश्न हैं जो आने वाले वर्षों में इस 'संकल्प' की परीक्षा लेंगे।

इस बजट का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है – बस्तर और सरगुजा पर विशेष फोकस।

■ अबूझमाड़ और जगरगुंडा में दो एजुकेशन सिटी (100 करोड़)। ■ 1,500 बस्तर फाइटर्स के पद। ■ बस्तर नेट परियोजना (5 करोड़)। ■ धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (200 करोड़) ■ बस्तर-सरगुजा विकास प्राधिकरण (75 करोड़) ■ पशुपालन गतिविधियां (15 करोड़) ■ अतिरिक्त पोषण सहायता (15 करोड़)

यह संकेत है कि सरकार नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अब केवल सुरक्षा बलों के भरोसे नहीं, बल्कि शिक्षा, इंटरनेट, खेल, पर्यटन और पोषण की रणनीति के साथ प्रवेश कर रही है। यदि एजुकेशन सिटी वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का केंद्र बनती है, तो यह अबूझमाड़ जैसे क्षेत्र में सामाजिक क्रांति की शुरुआत हो सकती है। लेकिन यदि यह केवल भवन निर्माण तक सीमित रह गई, तो इसका प्रभाव प्रतीकात्मक ही रहेगा।

सरकार ने पांच प्रमुख मिशन की घोषणा की है-

1. **मुख्यमंत्री एआई मिशन**
2. **मुख्यमंत्री खेल उत्कर्ष मिशन**
3. **मुख्यमंत्री पर्यटन विकास मिशन**
4. **मुख्यमंत्री अधोसंरचना मिशन**
5. **मुख्यमंत्री स्टार्टअप एवं एनआईपीयूएन मिशन**

एआई मिशन विशेष ध्यान आकर्षित करता है। रायपुर के मेकाहारा में एआई के उपयोग के लिए 10 करोड़ का प्रावधान किया गया है। यह दर्शाता है कि सरकार तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को आधुनिक बनाना चाहती है।

खेल उत्कर्ष मिशन के तहत पांच वर्षों तक प्रतिवर्ष 100 करोड़ का प्रावधान — यह युवा शक्ति को खेल के माध्यम से राष्ट्रीय मंच देने की कोशिश है। बस्तर और सरगुजा ओलंपिक इसका सामाजिक विस्तार हैं।पर्यटन विकास मिशन के अंतर्गत मैनपाट के लिए 5 करोड़ — यह पहाड़ी क्षेत्र को पर्यटन मानचित्र पर मजबूत करने का प्रयास है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़े प्रावधान किए गए हैं-

आयुष्मान योजना- 1,500 करोड़, **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन**- 2,000 करोड़, पांच नए मेडिकल कॉलेज, रायपुर में होम्योपैथी कॉलेज, एडवांस कार्डियक इंस्टीट्यूट, बिलासपुर में राज्य कैंसर संस्थान, 25 डायलिसिस केंद्र, 50 जन औषधि केंद्र, कर्मचारियों के लिए कैशलेस उपचार योजना (100 करोड़)।

यदि यह ढांचा समयबद्ध पूरा होता है, तो ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर बदल सकता है।लेकिन विपक्ष का आरोप है कि अस्पतालों की बकाया राशि और डॉक्टरों की कमी को देखते हुए यह राशि पर्याप्त नहीं है।

किसान, मजदूर - महिला और सामाजिक संतुलन साधने का प्रयास किया गया

जी राम जी योजना- 4,000 करोड़, **खाद्य सुरक्षा**- 6,500 करोड़, तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिए चरण पादुका योजना, गन्ना किसानों को बोनस, महिलाओं के लिए संपत्ति पंजीयन शुल्क में 50% छूट

यह बजट सामाजिक आधार को मजबूत करने की कोशिश करता है। विशेष रूप से महिलाओं को संपत्ति में रियायत — यह आर्थिक सशक्तिकरण का संकेत है।लेकिन महिला सुरक्षा और गैस सिलेंडर जैसे वादों पर स्पष्ट प्रावधान नहीं दिखने से विपक्ष को हमला करने का अवसर मिला।

उद्योग और अधोसंरचना

- 23 नए औद्योगिक पार्क (250 करोड़)
- औद्योगिक विकास मद (100 करोड़)
- मटनार और देवरगांव बैराज (2024 करोड़)
- आदर्श शहर समृद्धि योजना (200 करोड़)

सरकार का लक्ष्य स्पष्ट है — निवेश आकर्षित करना और रोजगार सृजित करना। लेकिन विपक्ष इसे 'कॉरपोरेट झुकाव' कह रहा है और पूछ रहा है कि छोटे उद्योगों और कृषि आधारित इकाइयों के लिए क्या विशेष है?

तंज, ठहाके और टकराव

बजट पेश होने में तीन मिनट की देरी — और विपक्ष का हमला। 'जो समय का प्रबंधन नहीं कर पा रहा, उसका वित्तीय

प्रबंधन क्या होगा?' ज्ञान, गति के बाद 'दुर्गति' का तंज। आलू उत्पादन पर चर्चा और 'चूहों' का सवाल। कवासी लखमा का कहना — 'हम बजट सुनते-सुनते थक गए।' यह दृश्य लोकतंत्र की जीवंतता दिखाता है। सदन केवल गंभीरता का मंच नहीं, राजनीतिक व्यंग्य का भी अखाड़ा है।

कांग्रेस ने की आलोचना

पूर्व मुख्यमंत्री ने इसे 'जुमलों की पतंग' कहा। रोजगार सृजन पर ठोस प्रावधान न होने का आरोप।संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण पर चुप्पी। महिलाओं के लिए विशेष पैकेज का अभाव। विपक्ष का मुख्य तर्क है — घोषणाएं अधिक, परिणाम संदिग्ध।

यह बजट आकार में बड़ा, दृष्टि में व्यापक और प्रस्तुति में प्रभावशाली है। लेकिन असली परीक्षा क्रियान्वयन की है।यदि बस्तर की एजुकेशन सिटी में बच्चों की आवाज गूंजे,यदि सरगुजा के युवा स्टार्टअप शुरू करें,यदि आयुष्मान कार्ड से मरीज को बिना उधारी इलाज मिले,यदि महिला संपत्ति की मालकिन बने —तब यह बजट ऐतिहासिक कहा जाएगा। अन्यथा यह भी राजनीतिक दस्तावेजों की भीड़ में खो जाएगा।

छत्तीसगढ़ आज एक चौराहे पर है।एक रास्ता संकल्प से समृद्धि की ओर जाता है।दूसरा रास्ता घोषणाओं से निराशा की ओर। अब देखना है — यह बजट एक इरादा प्रकट करता है — नीति को परिणाम तक ले जाने का। अब देखना यह है कि यह संकल्प प्रशासनिक इच्छा शक्ति में कितना बदलता है। यह बजट किस दिशा का सेतु बनता है। क्योंकि इतिहास गवाह है — घोषणाएं तालियां पाती हैं, पर परिणाम विश्वास कमाते हैं।

जीवन के तूफान

जीवन की खूबी विशेष,तूफानों से टकराने की
बिन बुलाए चले चाल, जीवन को हरवाने की।

रोकने से रुक जाए जो, किंचित वो तूफान नहीं
रुख मोड़े अथवा छोड़े, व्यर्थ का गुमान नहीं
आहत होते धक्के खाते, जिंदगी समझाने की
है कमजोर वक्त अभी, बात यही बतलाने की
जीवन की खूबी विशेष तूफानों से टकराने की।

निराशामयी हो धूप या, आशावादी छांव रहे
कुछ खोकर सुख पाने ,परिभाषा का दांव चले
चोट मिले अपनों से ,और कभी अनजाने की
कंटक कष्टों में घिर ,विजय ध्वज फहराने की
जीवन की खूबी विशेष, तूफ़ानों से टकराने की।

जीवन तूफान सामना है, हौसलों का मसला
अलग सूरतों वाले ,तूफ़ानों से मानव मचला
कुछ बलिदानों का भय, बात नहीं कतराने की
शमा प्रेम में जलता ,कर्मचाल यही परवाने की
जीवन की खूबी विशेष, तुफ़ानों से टकराने की।

आंच पर सोना खरा, सीखें जल में ही तैरना
संघर्षों से निखरे जीवन, पुरुषार्थ का फैलना
स्वजनों को दिखता, क्या जरूरत जतलाने की
बिसात बिछाई खुद उसने, राहों में लड़वाने की
जीवन की खूबी विशेष, तूफानों से टकराने की।

गर तूफ़ानों से भागे, नामो निशाँ है मिट सकता
मुफ्त उपाधि मंडन से, निज घर बेगाना लगता
अति सहज है जग में, ये बात नहीं चकराने की
धैर्य संकल्प बल से, वो दुविधा ही हटवाने की
जीवन की खूबी विशेष, तूफानों से टकराने की।

चौतरफा हमलों से घिरना ही बवंडर कहलाता
औरों से कम दुख वाली सोच से मन बहलाता
अर्जुन से तीरों सी पीड़ा दिखती निपटाने की
स्थिर काल में कृष्ण प्रेरणा मिले सिखलाने की
जीवन की खूबी विशेष, तूफानों से टकराने की।
बिन बुलाए चलते चाल, जीवन ही हरवाने की
जीवन की खूबी विशेष, तूफानों से टकराने की।

● कवि डॉ विजय कुमार गुप्ता 'मुन्ना'
दुर्ग छ ग, , 8516862721

माँ के नाम पेड़ लगाया उग गया अफीम

कहा गया था देश से,
एक पेड़ माँ के नाम लगाइए,
धरती को फिर से हरा बनाइए,
प्रकृति का कर्ज चुकाइए।

कुछ लोगों ने सच में
आँगन में नीम लगाया,
किसी ने पीपल रोपा,
किसी ने आम उगाया।

पर सत्ता के आँगन में
एक नई ही समझ आई,
नारे की हरियाली से
कमाई की हरियाली ज्यादा भायी।

पेड़ की जगह खेतों में
कुछ और ही लहलहाया,
माँ के नाम की छाया में
पाँच एकड़ अफीम उगाया।

अब सवाल हवा में तैर रहा है,
यह कैसी हरियाली आई है,
एक तरफ़ संदेश प्रकृति का,
दूसरी तरफ़ नशे की परछाई है।

पेड़ लगते तो छाया देते,
पंछी भी गीत सुनाते,
पर अफीम की फसलें तो बस
समाज को नशे में सुलाते।

नारे और नीयत के बीच
फासला इतना क्यों हो जाता है,
कागज़ पर हरियाली लिखते हैं
और खेतों में कुछ और उग जाता है।

धरती आज भी पूछ रही है—
क्या सच में मुझे हरा बनाओगे?
या हरियाली के नाम पर
सिर्फ़ नया बहाना बनाओगे?
क्योंकि पेड़ लगाना आसान है,
पर ईमान लगाना कठिन,
जब नीयत सच में हरी होगी
तभी हरा होगा यह वतन।

● नरेन्द्र पाण्डेय

आदिवासी नेतृत्व गढ़ रहा है विकास के नए सोपान

विष्णुदेव साय जनता के बीच के एक ऐसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं जिनकी सदाशयता और दूरगामी योजनाओं से प्रदेश में विकास और प्रगति का राह आसान हुआ है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी पृष्ठभूमि से आते हैं।

छगन लाल लोन्हारे
(उप संचालक जनसंपर्क)

छत्तीसगढ़ की खूबसूरत वादियों में स्थित जशपुर जिला के ग्राम बगिया में 21 फरवरी को जन्म लेने वाले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सज्जनता और सहृदयता की एक मिसाल है। दो वर्ष के अपने मुख्यमंत्रित्व काल में छत्तीसगढ़ राज्य में विकास का एक नया आयाम गढ़ने वाले तथा प्रदेश के नागरिकों के दिलों में राज करने वाले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज अपनी लोकप्रियता के शिखर पर विद्यमान है। विष्णुदेव साय जनता के बीच के एक ऐसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं जिनकी सदाशयता और दूरगामी योजनाओं से प्रदेश में विकास और प्रगति का राह आसान हुआ है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी पृष्ठभूमि से आते हैं।

केबिनेट बैठक में राज्य में समर्थन मूल्य पर धान बेचने वाले किसानों को 3100 रूपए प्रति क्विंटल के मान से अंतर की राशि होली पर्व से पहले एकमुश्त भुगतान किए जाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में 25 लाख 24 हजार 339 किसानों से 141.04 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा कृषक उन्नति योजना के तहत धान के मूल्य के अंतर की राशि के रूप में लगभग 10 हजार करोड़ रूपए का भुगतान होली त्यौहार से पहले एकमुश्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री स्वयं एक किसान पुत्र हैं वे किसानों की पीड़ा को भलीभांति जानते हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा कृषक उन्नति योजना के तहत राज्य के किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी 3100 रूपए प्रति क्विंटल के मान से की की गई है, जो देश में सर्वाधिक है। बीते दो वर्षों में कृषक उन्नति योजना के तहत राज्य के किसानों को धान के मूल्य के अंतर के रूप में 25 हजार करोड़ रूपए से अधिक का भुगतान किया जा चुका है। इस साल होली से पूर्व किसानों को 10 हजार करोड़ रूपए का भुगतान होने से यह राशि बढ़कर 35 हजार करोड़ रूपए हो जाएगी। किसान हितैशी सरकार के इस निर्णय से बाजार भी गुलजार होंगे, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था पर सीधा असर दिखाई देगा, ट्रैक्टर आदि की बिक्री में वृद्धि होगी।

प्रदेश की नवीन औद्योगिक नीति से राज्य में अब तक 7 लाख 83 हजार करोड़ रूपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं। मुख्यमंत्री ने अपने दो साल के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ को पूरे देश में एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश की जनता के बीच जाकर जनता का न केवल विश्वास जीता है बल्कि उनके हित को ध्यान में रखकर उन्होंने ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन किया है जिससे छत्तीसगढ़ का समग्र विकास सम्भव हो पाया है। यह केवल और केवल विष्णुदेव साय जैसे एक संवेदनशील, कर्मठ तथा ऊर्जावान मुख्यमंत्री ही सम्भव कर सकते हैं।

विष्णु देव की सुशासन में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष

2026 को महतारी गौरव वर्ष घोषित किया गया है। राज्य सरकार ने मातृशक्ति का सम्मान करते हुए 70 लाख महिलाओं को महतारी वंदन योजना के अंतर्गत प्रतिमाह 1000 रूपए की सहायता राशि प्रदान की जा रही है। प्रदेश के 42 हजार 878 महिला स्व- सहायता समूहों को आसान ऋण से अब तक 129.46 करोड़ रूपए का लाभ दिया गया है। प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना के अंतर्गत 4.81 लाख महिलाओं को 237 करोड़ रूपए की सहायता राशि दी गई है।

राज्य की 19 लाख से अधिक महिलाओं को पूरक पोषण आहार सुनिश्चित की गई है। महिला सुरक्षा के लिए सखी वन स्टॉप सेंटर और महिला हेल्पलाइन 181 की स्थापना की गई है। महिलाओं को रोजगार मूलक कार्यों के जरिए स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए पंचायत स्तर पर 52.20 करोड़ की लागत से 179 महतारी सदनों का निर्माण कराया जा रहा है। महिला समूहों के उत्पादों की बिक्री हेतु 200 करोड़ की लागत से नवा रायपुर में यूनिटी मॉल का निर्माण कराया जाएगा। मुख्यमंत्री की पहल पर दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर कल्याण योजना के अंतर्गत प्रदेश के 5.62 लाख भूमिहीन कृषि मजदूरों को प्रतिवर्ष 10 हजार रूपए की आर्थिक सहायता दी जा रही है।

राज्य सरकार द्वारा आवास और सामाजिक सुरक्षा को ध्यान में रख कर अब तक 26 लाख परिवारों को प्रधानमंत्री आवास स्वीकृति किए गए हैं। स्वच्छ पेयजल सबका अधिकार है। प्रदेश के 41 लाख से अधिक घरों तक स्वच्छ पेयजल पहुंच रहा है। गुणवत्तापूर्ण जलापूर्ति के लिए राज्य में 77 जल परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की गई है। 70 समूह जल प्रदाय योजनाओं से प्रदेश के 3208 गांव लाभान्वित हो रहे हैं। इसके अलावा राज्य के शत् प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण किया जा रहा है।

डबल इंजन की सरकार में रावघाट-जगदलपुर रेल परियोजना के साथ रेल नेटवर्क मैप से बस्तर जुड़ रहा है। जगदलपुर-विशाखापट्नम और रायपुर-विशाखापट्नम नई सड़क परियोजनाओं से विकास की नई राहें खुल रही हैं। प्रदेश के 32 नगरीय निकायों में नॉलेज बेस्ड सोसाइटी हेतु लाइट हाउस निर्माण की पहल की जा रही है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश के हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर चलने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने प्रदेश के हर वर्ग की बुनियादी सुविधाओं और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पीएम आवास योजना, कृषक उन्नति योजना, नियद नेल्ला नार, अखरा निर्माण योजना जैसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है और जनता के बीच अपनी एक अलग छवि निर्मित की है।

मुख्यमंत्री साय जनता के बीच और हर समुदाय के बीच एक ऐसा पुल बनाना जानते हैं जिससे सभी एक दूसरे से जुड़ सके और सभी प्रदेश के हित में अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह भी कर सके। उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य समय पदेश की जनता को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन केवल उनका नहीं है अपितु प्रदेश की जनता की नि: स्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है। वे सही मायने में एक ऐसे जननेता हैं जिनके लिए जनता ही सब कुछ हैं। ऐसे सेवाभावी और लोकप्रिय जनसेवक बहुत कम होते हैं जिनके लिए जनता का विकास और जनता का साथ ही सबसे महत्वपूर्ण होता है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का अब तक का कार्यकाल इस बात का प्रमाण है कि यदि नेतृत्व ईमानदार, समर्पित और जनता की आकांक्षाओं से जुड़ा हो तो विकास की राह कठिन नहीं होगी।

हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर चलने का बीड़ा उठाया

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश के हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर चलने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने प्रदेश के हर वर्ग की बुनियादी सुविधाओं और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पीएम आवास योजना, कृषक उन्नति योजना, नियद नेल्ला नार, अखरा निर्माण योजना जैसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है और जनता के बीच अपनी एक अलग छवि निर्मित की है।

छत्तीसगढ़ राज्य में यह पहली बार हुआ है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में स्कूलों में एक विशेष अवसर पर न्योता भोजन का भी आयोजन किया जाता है। न्योता भोजन सामुदायिक भागीदारी पर आधारित एक ऐसा उपक्रम है जिसके माध्यम से स्कूल के बच्चों को समाज से जोड़ा जा सके एवं उनके भीतर समानता की भावना विकसित किया जा सके।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जनता के बीच और हर समुदाय के बीच एक ऐसा पुल बनाना जानते हैं जिससे सभी एक दूसरे से जुड़ सके और सभी प्रदेश के हित में अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह भी कर सके। उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य समय पदेश की जनता को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन केवल उनका नहीं है अपितु प्रदेश की जनता की निस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है। वे सही मायने में एक ऐसे जननेता हैं जिनके लिए जनता ही सब कुछ हैं। ऐसे सेवाभावी और लोकप्रिय जनसेवक बहुत कम होते हैं जिनके लिए जनता का विकास और जनता का साथ ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। यह सभी प्रदेशवासियों के लिए गौरवान्वित होने का विषय है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय उनके अपने बीच के लोकप्रिय नेता हैं जिनके लिए प्रदेश की जनता की खुशहाली ही सर्वोपरि है।

Impact India AI समिट: भारत की नई डिजिटल क्रांति और छत्तीसगढ़ के लिए स्वर्णिम अवसर

Bhupender Singh, Director - AI, Webority Technologies

हाल ही में आयोजित 'Impact India AI समिट' ने यह साफ कर दिया है कि भारत अब केवल दुनिया का 'बैक ऑफिस' नहीं रहेगा, बल्कि वह वैश्विक AI क्रांति का नेतृत्व करेगा। यह समिट केवल विशेषज्ञों के लिए नहीं थी, बल्कि इसका सीधा असर हमारे छोटे व्यापारियों, किसानों, छात्रों और सरकारी नीतियों पर पड़ने वाला है।

यह समिट क्यों आयोजित की गई?

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य भारत को 'AI-फर्स्ट नेशन' बनाना है। भारत के पास दुनिया का सबसे बड़ा डेटा और युवाओं की मेधा है। सरकार और वैश्विक कंपनियां चाहती हैं कि हम केवल विदेशी AI टूल्स का उपयोग न करें, बल्कि अपना 'स्वदेशी AI' विकसित करें जो हमारी अपनी भाषाओं और हमारी स्थानीय समस्याओं (जैसे कृषि और स्वास्थ्य) का समाधान कर सके।

व्यापार और उद्यमियों के लिए क्या है खास?

- व्यापार (Businesses): छोटे और मध्यम उद्योगों के लिए AI अब महंगा नहीं रहेगा। समिट में ऐसे समाधानों पर चर्चा हुई जहाँ एक छोटा किराना व्यापारी भी AI का उपयोग करके अपने स्टॉक और ग्राहकों की पसंद का सटीक अनुमान लगा सकेगा।
- उद्यमी (Entrepreneurs): नए स्टार्टअप्स के लिए सरकार 'AI कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर' तक पहुँच आसान बना रही है। अब आपको महंगे सर्वर खरीदने की जरूरत नहीं, आप सरकारी क्लाउड का उपयोग करके अपने आइडिया को हकीकत में बदल सकते हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार के लिए एक बड़ा मौका

छत्तीसगढ़, जो अपनी खनिज संपदा और कृषि के लिए जाना जाता है, अब 'AI हब' बन सकता है। छत्तीसगढ़ सरकार इस अवसर का लाभ उठाकर अपनी नीतियों में AI को इस तरह शामिल कर सकती है-

- **1. कृषि और धान का डिजिटल प्रबंधन**-AI के जरिए मिट्टी की सेहत और मौसम का सटीक अनुमान लगाकर किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है।
- **2. सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता**- भूमि रिकॉर्ड (Land Records) और राशन वितरण में AI का उपयोग करके भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है और सेवाओं को तेज बनाया जा सकता है।
- **3. स्वास्थ्य सेवाएं (Healthtech):** हमारे सुदूर वनांचलों में AI आधारित डायग्नोस्टिक्स के जरिए विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी को पूरा किया जा सकता है।

ग्लोबल दिग्गजों की भारत में रणनीतिक भागीदारी

OpenAI, Google और Anthropic जैसी दिग्गज कंपनियां अब भारत को एक बाजार के रूप में नहीं, बल्कि एक 'पार्टनर' के रूप में देख रही हैं-

- **इन्फ्रास्ट्रक्चर**- ये कंपनियां भारत में विशाल 'डेटा सेंटर' स्थापित कर रही हैं ताकि भारत का डेटा भारत में ही सुरक्षित रहे।
- **स्थानीय भाषाएं**- Google और OpenAI भारतीय भाषाओं (जैसे हिंदी, छत्तीसगढ़ी आदि) को बेहतर समझने के लिए भारी निवेश कर रहे हैं, ताकि तकनीक का लाभ अंग्रेजी न जानने वाले लोगों तक भी पहुँचे।

हमारा भविष्य, हमारा नियंत्रण

समिट का सबसे बड़ा संदेश यह था कि AI कोई जादू नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली औजार है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य के लिए यह अपनी पहचान बदलने का समय है। यदि हम सही नीतियां और बुनियादी ढांचा (Infrastructure) तैयार करते हैं, तो हमारे युवा रायपुर या बस्तर में बैठकर दुनिया के लिए AI टूल्स बना सकेंगे।

हमें तकनीक का इंतजार नहीं करना है, हमें तकनीक का हिस्सा बनना है!

"AI की नई दुनिया'

- **OpenAI/Google:** ये भारत में स्थानीय भाषाओं के बड़े मॉडल (LLM) बनाने में मदद कर रहे हैं।
- **भारत सरकार का संकल्प-** 'इंडिया AI मिशन' के तहत 10,000 से अधिक GPU का निर्माण, जो AI रिसर्च की गति को 10 गुना बढ़ा देगा।
- **छत्तीसगढ़ का विजन-** राज्य में 'AI एक्सीलेंस सेंटर' की स्थापना से स्थानीय युवाओं को वैश्विक रोजगार के अवसर मिलेंगे।

कलयुग से सतयुग की ओर AI युग

शायद कलयुग समाप्त नहीं हो रहा है। शायद वह पहली बार अपने असली रूप में हमारे सामने आ रहा है। यदि हम युगों को केवल धार्मिक कथा या पुराणों की कहानी मानकर देखें, तो उनकी व्याख्या सीमित रह जाती है। लेकिन यदि हम युगों को मानव चेतना के विकास-क्रम के रूप में समझने का प्रयास करें, तो पूरी तस्वीर बदल जाती है।

जब भी यह कहा जाता है कि कलयुग चल रहा है, तो हमारे मन में एक विशेष तस्वीर उभरती है—अंधकार, अव्यवस्था, नैतिक पतन और मानवीय मूल्यों का क्षरण। ऐसा लगता है मानो यह समय मनुष्य के पतन का समय है। लेकिन जब लोग मुझसे कहते हैं कि 'कलयुग समाप्त होने वाला है', तो मैं अक्सर मुस्कुरा देता हूँ। क्योंकि मेरे मन में एक अलग विचार उठता है—शायद कलयुग समाप्त नहीं हो रहा है। शायद वह पहली बार अपने असली रूप में हमारे सामने आ रहा है। यदि हम युगों को केवल धार्मिक कथा या पुराणों की कहानी मानकर देखें, तो उनकी व्याख्या सीमित रह जाती है। लेकिन यदि हम युगों को मानव चेतना के विकास-क्रम के रूप में समझने का प्रयास करें, तो पूरी तस्वीर बदल जाती है।

कलयुग का अर्थ क्या है?

जरा 'कलयुग' शब्द को ही पकड़िए। 'कल' शब्द का अर्थ केवल बीता हुआ या आने वाला समय नहीं होता। हिंदी में जब हम कहते हैं 'कल-पुर्जे', तो उसका अर्थ मशीन के हिस्से से होता है। इस दृष्टि से देखें तो 'कल' का एक अर्थ मशीन भी हो सकता है। और 'युग' का अर्थ है—वह समय जिसमें कोई विशेष शक्ति प्रमुख हो। तो क्या यह संभव नहीं कि कलयुग का अर्थ ही हो—

मशीनों का युग? यदि हम अपने चारों ओर देखें, तो यह प्रश्न और भी प्रासंगिक लगने लगता है। आज AI लेख लिख रहा है। रोबोट जटिल सर्जरी कर रहे हैं। एल्गोरिद्म चुनावी रणनीतियाँ बना रहे हैं। डेटा हमारी आदतों और व्यवहार को पढ़ रहा है।

मशीनें अब केवल औज़ार नहीं रहीं। वे निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बनती जा रही हैं। वे हमारी सोच का विस्तार भी हैं और कभी-कभी उसका विकल्प भी बनती दिखाई देती हैं। क्या यह वही समय नहीं है जिसे हम मशीनों का युग कह सकते हैं? लेकिन इस प्रश्न को समझने के लिए हमें थोड़ा पीछे जाना होगा— सतयुग, त्रेता और द्वापर तक।

सतयुग : चेतना का युग

सतयुग को अक्सर सत्य का युग कहा जाता

है। लेकिन यदि हम इसे एक और दृष्टि से देखें, तो यह चेतना का युग प्रतीत होता है। उस समय मनुष्य बाहर की दुनिया से अधिक अपने भीतर की दुनिया पर केंद्रित था। ध्यान, तप, आत्मानुशासन और आध्यात्मिक साधना—ये उसकी शक्ति के स्रोत थे। कोई बड़ी तकनीक नहीं थी। कोई विशाल संस्थागत ढाँचे नहीं थे। लेकिन मनुष्य की भीतरी ऊर्जा अत्यंत प्रखर थी। इसे हम एक प्रकार से 'इनर टेक्नोलॉजी' का युग कह सकते हैं।

त्रेता: व्यवस्था का युग

यह वह समय था जब समाज ने अपने लिए संरचनाएँ बनानी शुरू कीं। राज्य बने, मर्यादाएँ स्थापित हुईं, सामाजिक संस्थाएँ खड़ी हुईं। मनुष्य की चेतना अब केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं रही। उसने स्वयं को सामाजिक व्यवस्था में ढालना शुरू किया। यह वह दौर था जब मनुष्य ने बाहरी संरचनाओं के माध्यम से जीवन को व्यवस्थित करना शुरू किया।

द्वापर : बुद्धि का युग

द्वापर में यह प्रक्रिया और जटिल हो गई। रणनीति, राजनीति और बौद्धिक शक्ति का विस्तार हुआ। युद्ध केवल शारीरिक शक्ति का नहीं, बल्कि बुद्धि और रणनीति का खेल बन गया। यह वह समय था जब मानव मस्तिष्क अपनी विश्लेषणात्मक क्षमता की ओर तेजी से बढ़ रहा था।

कलयुग- जिस समय में जी रहे हैं, उसे यदि इस क्रम में देखें तो वह तकनीक प्रधान युग दिखाई देता है।

सतयुग - **चेतना प्रधान**
त्रेता - **व्यवस्था प्रधान**
द्वापर - **बुद्धि प्रधान**
कलयुग - **तकनीक प्रधान**

अर्थात यात्रा भीतर से बाहर की ओर हुई है। पहले मनुष्य स्वयं केंद्र था। अब उसकी बनाई मशीनें केंद्र में आती जा रही हैं।

क्या यह पतन है?

अक्सर कहा जाता है कि कलयुग पतन का युग है। लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? संभव है कि यह पतन नहीं, बल्कि विकास की एक स्वाभाविक अवस्था हो। मानव बुद्धि ने हजारों वर्षों में जो क्षमता अर्जित की, उसका स्वाभाविक परिणाम तकनीक के रूप में सामने आया है। लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण खतरा भी छिपा है। मशीनें अत्यंत तेज़ हैं, पर उनमें संवेदना नहीं होती। वे विश्लेषण कर सकती हैं, पर करुणा का निर्णय नहीं ले सकतीं। यदि मनुष्य अपनी चेतना को निष्क्रिय कर देगा, तो मशीनें दिशा तय करने लगेंगी। और यदि मनुष्य सजग रहेगा, तो वही मशीनें उसकी सेवा करेंगी।

एक नया सतयुग?

संभव है कि जब मशीनें हमारे अधिकांश काम संभाल लेंगी, तब मनुष्य फिर से वही प्रश्न पूछेगा— 'मैं कौन हूँ?' और शायद वहीं से एक नया सतयुग शुरू होगा— जंगलों में नहीं, बल्कि डिजिटल दुनिया के बीच। युग बदलते रहते हैं। लेकिन हर युग में एक प्रश्न स्थायी रहता है— क्या मनुष्य अपनी जागरूकता बचा पा रहा है? क्योंकि सवाल यह नहीं है कि युग कौन सा है। सवाल यह है कि इस युग में हम कितने जागरूक हैं।

क्या AI कभी इंसान बन पाएगा?

जितना हम एआई को समझते हैं, उतना ही यह भी समझ आता है कि तकनीक तेज़ जरूर है, लेकिन उसके पास संवेदना नहीं है। मनुष्य की यात्रा हजारों वर्षों की है– गुफाओं से लेकर ग्लोबल नेटवर्क तक। इस यात्रा में मनुष्य ने बुद्धि, अनुभव और चेतना को विकसित किया है। हमारे अध्यात्म ने सदियों से कहा– 'यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे।' जो भीतर है वही बाहर है। मनुष्य के मस्तिष्क में औसतन 86 अरब के आसपास न्यूरॉन होते हैं। इनके बीच लगभग 100 खरब तक कनेक्शन बनते हैं। संख्या के स्तर पर मशीन मनुष्य को पार कर सकती है। शतरंज की चालों में, गणना की गति में, डेटा विश्लेषण में–वह हमें पछाड़ सकती है।

लेकिन क्या वह प्रेम कर सकती है?
क्या वह नदी देखकर ठिठक सकती है?
क्या वह किसी कविता में रो सकती है?

एआई को चलाने के लिए विशाल सर्वर, बिजली और डेटा की जरूरत होती है। जबकि प्रकृति ने एक कोशिका और डीएनए से मनुष्य जैसा जटिल जीवन बना दिया। यही फर्क है–मशीन प्रोसेस करती है, लेकिन मनुष्य अनुभव करता है। क्या वह नदी को देखकर ठहर सकती है? क्या वह नीम की छाँव में बैठकर स्मृति में लौट सकती है? क्या वह कविता लिखते हुए भीतर से काँप सकती है? शब्द केवल डेटा नहीं होते। शब्द ब्रह्म भी होते हैं। मशीन के पास प्रोसेसिंग है, पर क्या उसके पास अनुभव है? शरीर के समान हार्डवेयर है, पर क्या उसके पास आत्मा है?

एआई हमारे लिए उपयोगी हो सकता है। वह हमें रूटीन कामों से मुक्त कर सकता है और समय दे सकता है। लेकिन वह जीवन के दुख और सुख को समाप्त नहीं कर सकता, क्योंकि ये दोनों ही मानव अनुभव का हिस्सा हैं। शायद एआई का सबसे बड़ा योगदान यही होगा कि वह हमें अधिक समय दे–ताकि हम फिर से प्रकृति, संवेदना और अपने भीतर की चेतना को समझ सकें। क्योंकि अंततः तकनीक चाहे जितनी विकसित हो जाए, मनुष्य होने का अनुभव अभी भी जैविक और भावनात्मक ही है–सर्वर और सिलिकॉन में नहीं।

खूनी संघर्ष और प्रतिशोध की धरती कुटरा बनी परिवर्तन की मिसाल

- गांव के बच्चे बने डॉक्टर, सी.ए. और न्यायाधीश
- स्कूल ,अस्पताल,और मेडिकल कॉलेज का हो रहा निर्माण

आशीष तिवारी

जांजगीर-चाम्पा। कल तक जिस धरती पर हिंसा, खूनी संघर्ष और प्रतिशोध की गूँज सुनाई देती थी, आज उसी कुटरा गाँव में शिक्षा की ताकत और किताबों के पन्नों की सरसराहट एक नई कहानी लिख रही है। यह बदलाव संभव हुआ है राघवेन्द्र पाण्डेय की संवेदना, साहस और दूरदृष्टि से, जिन्होंने रक्तरंजित अतीत को पीछे छोड़कर विकास की नई राह दिखाई, जिला मुख्यालय जांजगीर से मात्र 10 किलोमीटर दूर स्थित कुटरा गाँव कभी छोटी-छोटी बातों पर होने वाली हत्याओं और नरसंहार के लिए चर्चा में था। लगभग 15 वर्ष पहले तक यहाँ से हिंसा और खूनी संघर्ष की खबरें आम थीं। लेकिन आज उसी गाँव में बच्चों की पढ़ाई, सफलता और उज्ज्वल भविष्य की चर्चाएँ सुनाई देती हैं।

जहाँ कभी आठवीं कक्षा तक ही शिक्षा की व्यवस्था थी, वहाँ अब हायर सेकेंडरी स्कूल, नर्सिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज और भव्य अस्पताल का निर्माण हो रहा है।

स्कूल बना बदलाव का आधार

लंबे समय से अशांत रहे कुटरा के ग्रामीणों ने वर्ष 2007 में जांजगीर निवासी एवं कुटरा मालगुजार परिवार के राघवेन्द्र सरकार पाण्डेय से गाँव में शांति स्थापित करने हेतु पहल करने का अनुरोध किया था। इसके बाद उनके प्रयासों से शासन ने वर्ष 2008 में रामसरकार मिडिल स्कूल का उन्नयन कर उसे हाईस्कूल बनाया, वर्ष 2014 में राघवेन्द्र पाण्डेय ने अपने पूर्वजों की भूमि पर शासकीय हाईस्कूल की स्थापना के लिए नींव रखी और पूरे गाँव में सामूहिक शांति का आह्वान किया आज रामसरकार पाण्डेय शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल में बच्चे न केवल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि अपने सपनों को आकार भी दे रहे हैं। आज गाँव की बेटियाँ न केवल स्कूल जा रही हैं, बल्कि उच्च शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर समाज का नेतृत्व भी कर रही हैं, गाँव की बेटी प्रिंसी सी. ए. है मिंटी ने एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की है, गांव के नौजवान न्यायाधीश और प्रोफेसर जैसे पदों पर है।

राघवेन्द्र की संवेदना बनी सबसे बड़ी ताकत

राघवेन्द्र पाण्डेय के कार्यों की सबसे बड़ी ताकत उनकी संवेदनशीलता रही है। उन्होंने न केवल स्कूल की नींव रखी, बल्कि उन परिवारों के दर्द को भी समझा, जिन्होंने हिंसा की मार झेली थी। उनके द्वारा स्थापित 'शिक्षा के मंदिर' ने गाँव में साक्षरता बढ़ाई और लोगों की सोच में प्रतिशोध की जगह प्रगति को स्थापित किया। उन्होंने ग्रामीणों में यह विश्वास जगाया कि संघर्ष का समाधान हिंसा नहीं, बल्कि संवाद, शिक्षा और विकास है। लहूलुहान अतीत को पीछे छोड़कर कुटरा अब एक शांत, समृद्ध और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

राज्य में प्रतिष्ठित नागरिक का मिला सम्मान

जहाँ कभी प्रगति और समृद्धि केवल सपना हुआ करती थी, वहाँ आज शासन द्वारा नर्सिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज और भव्य अस्पताल का निर्माण कराया जा रहा है। राघवेन्द्र पाण्डेय ने कुटरा में हाईस्कूल तथा समीपवर्ती ग्राम कुथुर में आंगनबाड़ी और सामुदायिक भवन के निर्माण हेतु अपनी पैतृक भूमि शासन को दान में दी है। सामाजिक शांति, ग्राम विकास और शिक्षा विस्तार के क्षेत्र में उनके सतत प्रयासों को वर्ष 2015 में जिला प्रशासन द्वारा सार्वजनिक समारोह में सम्मानित किया गया। तथा वर्ष 2019 में जिला पंचायत के प्रतिवेदन पर कलेक्टर ने उनके नाम को 'प्रतिष्ठित व्यक्तियों' की सूची में शामिल कर राजभवन प्रेषित किया। इसे उनके सामाजिक कार्यों की औपचारिक और उच्च स्तरीय मान्यता के रूप में देखा गया।

आदिवासी अस्मिता या चुनावी राजनीति? बंगाल में नया विवाद

महिला दिवस की पूर्व संध्या पर भारतीय राजनीति में एक ऐसा विवाद सामने आया, जिसने केवल राजनीतिक दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप को ही नहीं बढ़ाया, बल्कि देश की संवैधानिक मर्यादाओं, आदिवासी अस्मिता और महिला सम्मान को भी बहस के केंद्र में ला खड़ा किया। विवाद की शुरुआत पश्चिम बंगाल में आयोजित एक आदिवासी सम्मेलन से हुई, जहां देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मौजूदगी और राज्य सरकार की भूमिका को लेकर गंभीर आरोप लगे।

भाजपा की ओर से इस मुद्दे को जोरदार ढंग से उठाया गया। पार्टी की महिला इकाई की राष्ट्रीय अध्यक्ष वनाथी श्रीनिवासन ने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और राज्य सरकार के किसी भी वरिष्ठ मंत्री ने राष्ट्रपति का स्वागत नहीं किया। उनके अनुसार, संथाल आदिवासी सम्मेलन जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में राष्ट्रपति की मौजूदगी के बावजूद राज्य सरकार की यह दूरी केवल प्रशासनिक चूक नहीं, बल्कि एक गंभीर राजनीतिक संदेश है।

भाजपा का आरोप यहीं तक सीमित नहीं रहा। पार्टी नेताओं ने कहा कि कार्यक्रम की जगह अंतिम समय में बदलकर एक अपेक्षाकृत छोटे स्थान पर कर दी गई, जिससे अव्यवस्था की स्थिति बनी। यह भी कहा गया कि राष्ट्रपति ने स्वयं इस बदलाव को लेकर नाराजगी जताई थी। भाजपा ने इस घटना को केवल एक प्रशासनिक घटना नहीं, बल्कि 'संवैधानिक पद का अपमान' बताया।

इस विवाद को राष्ट्रीय स्तर पर तब और तूल मिला जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी इस मुद्दे पर सार्वजनिक रूप से प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि महिला दिवस के अवसर पर देश महिलाओं के सम्मान की बात कर रहा है, लेकिन इसी समय पश्चिम बंगाल में देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति का अपमान हुआ है। प्रधानमंत्री ने इसे केवल राजनीतिक विवाद नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक असंवेदनशीलता का उदाहरण बताया। उनका कहना था कि राष्ट्रपति एक आदिवासी परंपरा के उत्सव में शामिल होने गई थीं, लेकिन राज्य सरकार ने कार्यक्रम से दूरी बनाकर गलत संदेश दिया। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि बंगाल की जनता इस व्यवहार को स्वीकार नहीं करेगी।

इस पूरे विवाद के बीच राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का बयान भी चर्चा में रहा। उन्होंने सार्वजनिक रूप से पश्चिम बंगाल को अपनी 'मायका' बताते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को छोटी बहन कहा और यह सवाल भी उठाया कि आखिर मुख्यमंत्री कार्यक्रम में क्यों नहीं आईं। उन्होंने कार्यक्रम स्थल बदलने को लेकर भी असंतोष व्यक्त किया।

लेकिन कहानी का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए पलटवार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा चुनाव से पहले राजनीतिक लाभ के लिए राष्ट्रपति के पद का इस्तेमाल कर रही है। कोलकाता में एक धरना स्थल पर बोलते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा इतनी नीचे गिर चुकी है कि वह राष्ट्रपति कार्यालय को भी राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही है। उन्होंने यह भी दावा किया कि राष्ट्रपति के कार्यक्रम में राज्य सरकार के प्रतिनिधि मौजूद थे और जो जानकारी राष्ट्रपति तक पहुंचाई गई, वह पूरी तरह सही नहीं थी।

ममता बनर्जी ने यह तर्क भी दिया कि चुनावी समय में हर कार्यक्रम में मुख्यमंत्री की मौजूदगी संभव नहीं होती। उन्होंने भाजपा पर यह आरोप लगाया कि वह पश्चिम बंगाल में आदिवासी विकास के मुद्दे को राजनीतिक रंग देकर राज्य सरकार को बदनाम करने की कोशिश कर रही है। यहीं से यह विवाद एक साधारण प्रोटोकॉल विवाद से आगे बढ़कर व्यापक राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन गया। एक तरफ भाजपा इसे आदिवासी सम्मान और संवैधानिक गरिमा का मुद्दा बता रही है, तो दूसरी तरफ तृणमूल कांग्रेस इसे चुनावी राजनीति का हिस्सा मान रही है।

असल में यह विवाद कई स्तरों पर महत्वपूर्ण है। पहला सवाल संवैधानिक मर्यादा का है। राष्ट्रपति देश का सर्वोच्च संवैधानिक पद है और उनके साथ जुड़े कार्यक्रमों में प्रोटोकॉल का पालन केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के सम्मान का प्रतीक माना जाता है। दूसरा पहलू आदिवासी राजनीति का है। द्रौपदी मुर्मू केवल भारत की राष्ट्रपति ही नहीं, बल्कि देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति भी हैं। इसलिए उनके सम्मान या अपमान की चर्चा स्वाभाविक रूप से आदिवासी अस्मिता के प्रश्न से भी जुड़ जाती है।

तीसरा और शायद सबसे महत्वपूर्ण पहलू चुनावी राजनीति का है। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनावों की पृष्ठभूमि में हर राजनीतिक घटना को नए अर्थ मिल जाते हैं। भाजपा लंबे समय से बंगाल में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने की कोशिश कर रही है, जबकि तृणमूल कांग्रेस अपने गढ़ को बचाने में लगी है। ऐसे में राष्ट्रपति से जुड़ा यह विवाद केवल एक प्रोटोकॉल बहस नहीं रह जाता, बल्कि वह चुनावी विमर्श का हिस्सा बन जाता है। भाजपा इसे आदिवासी सम्मान और महिला गरिमा का मुद्दा बना रही है, जबकि तृणमूल कांग्रेस इसे राजनीतिक साजिश के रूप में पेश कर रही है।

महिला दिवस की पूर्व संध्या पर सामने आया यह विवाद हमें यह भी याद दिलाता है कि भारतीय राजनीति में प्रतीकों का कितना महत्व है। राष्ट्रपति, आदिवासी पहचान और महिला नेतृत्व – ये तीनों प्रतीक इस विवाद में एक साथ मौजूद हैं। यदि इस पूरे घटनाक्रम को देखें, तो यह केवल दो नेताओं के बीच की राजनीतिक बहस नहीं है। यह उस भारत की कहानी भी है, जहां सम्मान और राजनीति अक्सर एक ही मंच पर खड़े दिखाई देते हैं। अब देखना यह है कि आने वाले दिनों में यह विवाद केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित रहता है या फिर यह पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बड़ा चुनावी मुद्दा बनकर उभरता है। लेकिन इतना तय है कि महिला दिवस के पहले उठा यह सवाल केवल राजनीति का नहीं, बल्कि संवैधानिक गरिमा और सामाजिक संवेदनशीलता का भी है।

क्रिकेट के हर फॉर्मेट में भारत का जलवा

भारत में क्रिकेट केवल खेल नहीं, बल्कि एक भावना है। यह वह खेल है जो देश के करोड़ों लोगों को एक साथ जोड़ देता है। पिछले दो दशकों में भारतीय क्रिकेट ने जिस तरह से खुद को बदला है, उसने दुनिया को यह दिखा दिया कि भारत अब केवल प्रतिभा का देश नहीं, बल्कि निरंतर जीतने वाली ताकत बन चुका है। आज स्थिति यह है कि भारत क्रिकेट के लगभग हर फॉर्मेट में चैंपियन बनने की क्षमता रखने वाली टीम के रूप में उभरा है।

भारतीय क्रिकेट की इस यात्रा की शुरुआत उस ऐतिहासिक पल से मानी जाती है जब कपिल देव के नेतृत्व में India national cricket team ने Cricket World Cup 1983 जीतकर दुनिया को चौंका दिया था। उस समय भारतीय टीम को मजबूत दावेदार नहीं माना जाता था, लेकिन इस जीत ने पूरे देश में क्रिकेट के प्रति नया आत्मविश्वास पैदा किया।इसके बाद भारतीय क्रिकेट ने कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन 2000 के दशक के बाद टीम का चरित्र बदलने लगा। Sourav Gangulyकी कप्तानी में भारतीय टीम ने आक्रामक मानसिकता अपनाई और विदेशी मैदानों पर भी मुकाबला करना सीखा।

फिर आया वह दौर जिसने भारतीय क्रिकेट को विश्व की शीर्ष टीमों में स्थापित कर दिया। Mahendra Singh Dhoni के नेतृत्व में भारत ने 2007 में ICC T20 World Cup 2007 जीतकर टी20 क्रिकेट के युग की शुरुआत की। युवा टीम की इस जीत ने पूरे देश को उत्साहित कर दिया। इसके बाद 2011 में भारत ने ICC Cricket World Cup 2011 जीतकर 28 साल का लंबा इंतजार खत्म किया। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में मिली इस जीत ने भारतीय क्रिकेट इतिहास में एक अमिट अध्याय जोड़ दिया। 2013 में भारत ने ICC Champions Trophy 2013 भी जीत ली। इस तरह सीमित ओवरों के दोनों बड़े टूर्नामेंट भारत के नाम हो गए और भारतीय टीम दुनिया की सबसे संतुलित टीमों में गिनी जाने लगी।

भारतीय क्रिकेट का यह दौर केवल जीत का दौर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, अवसर और बदलती सोच का प्रतीक है।

टेस्ट क्रिकेट में भी भारत ने अपनी ताकत साबित की। Virat Kohli की कप्तानी में भारतीय टीम ने फिटनेस और आक्रामकता का नया मानक स्थापित किया। विदेशी दौरों पर जीत और मजबूत गेंदबाजी आक्रमण ने यह साबित कर दिया कि भारत अब केवल घरेलू परिस्थितियों में ही नहीं, बल्कि दुनिया के किसी भी मैदान पर जीत सकता है। भारतीय क्रिकेट की इस सफलता के पीछे मजबूत संरचना भी है। Board of Control for Cricket in India ने घरेलू क्रिकेट को मजबूत किया, युवा खिलाड़ियों को अवसर दिया और पेशेवर ढांचे को विकसित किया। इसी प्रक्रिया से Indian Premier League जैसी लीग सामने आई, जिसने भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाई दी।

लेकिन भारतीय क्रिकेट की यह कहानी केवल पुरुष टीम तक सीमित नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने भी अपने प्रदर्शन से यह साबित कर दिया है कि देश की बेटियां भी क्रिकेट के मैदान पर उतनी ही मजबूती से खड़ी हैं। भारतीय महिला क्रिकेट को पहचान दिलाने में Mithali Raj की भूमिका ऐतिहासिक रही है। उन्होंने वर्षों तक टीम का नेतृत्व किया और अपनी बल्लेबाजी से दुनिया को प्रभावित किया। इसी तरह तेज गेंदबाज Jhulan Goswami ने भारतीय महिला गेंदबाजी को नई पहचान दी। उनकी निरंतरता और अनुशासन ने टीम को मजबूती दी।

महिला क्रिकेट को देश में व्यापक पहचान तब मिली जब भारतीय टीम ICC Women's Cricket World Cup 2017 के फाइनल तक पहुंची। इस प्रदर्शन ने पूरे देश में महिला क्रिकेट के प्रति नई दिलचस्पी पैदा कर दी। इसके बाद ICC Women's T20 World Cup 2020 में भी भारतीय टीम फाइनल तक पहुंची और यह साबित किया कि महिला क्रिकेट में भारत एक मजबूत शक्ति बन चुका है। नई पीढ़ी की खिलाड़ी इस विरासत को आगे बढ़ा रही हैं। कप्तान Harmanpreet Kaur की आक्रामक बल्लेबाजी और नेतृत्व ने टीम को नई दिशा दी है। वहीं Smriti Mandhana अपनी आकर्षक बल्लेबाजी के कारण विश्व क्रिकेट की प्रमुख खिलाड़ियों में गिनी जाती हैं।

महिला क्रिकेट के विकास में बड़ा बदलाव तब आया जब Board of Control for Cricket in India ने महिला खिलाड़ियों के लिए भी पेशेवर मंच तैयार किया और Women's Premier League की शुरुआत की। इस लीग ने महिला क्रिकेट को लोकप्रियता, आर्थिक सुरक्षा और वैश्विक पहचान दी। आज भारतीय क्रिकेट की तस्वीर बदल चुकी है। पुरुष टीम और महिला टीम दोनों ही अंतरराष्ट्रीय मंच पर मजबूती से खड़ी हैं। प्रतिभा, फिटनेस, तकनीक और आत्मविश्वास हर स्तर पर भारतीय खिलाड़ी दुनिया की बड़ी टीमों को चुनौती दे रहे हैं।

इसलिए जब हम कहते हैं कि भारत क्रिकेट के हर फॉर्मेट में चैंपियन बनने की क्षमता रखता है, तो यह केवल किसी एक टीम की कहानी नहीं है। यह उस पूरे क्रिकेट तंत्र की कहानी है जिसमें पुरुष और महिला दोनों टीमें मिलकर देश के खेल इतिहास को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही हैं। भारतीय क्रिकेट का यह दौर केवल जीत का दौर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, अवसर और बदलती सोच का प्रतीक है। यही कारण है कि आने वाले वर्षों में भी भारत विश्व क्रिकेट के केंद्र में बना रहेगा।

चैत्र नवरात्रि और नौ विद्या: आध्यात्मिकता, विज्ञान और स्वास्थ्य का संगम

भारतीय परंपरा में चैत्र नवरात्रि केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। यह प्रकृति, मनोविज्ञान और ऊर्जा के परिवर्तन से जुड़ा एक गहरा सांस्कृतिक विज्ञान भी माना जाता है। यह वही समय होता है जब सर्दी समाप्त होकर वसंत का आगमन होता है। आयुर्वेद के अनुसार इस काल में शरीर की जैविक संरचना और ऊर्जा संतुलन में परिवर्तन आता है। इसीलिए नवरात्रि को शरीर, मन और चेतना के शुद्धिकरण का समय माना गया है। इस प्रक्रिया को समझाने के लिए भारतीय तांत्रिक और शक्त परंपरा में 'नौ विद्या देवियों' की अवधारणा सामने आती है।

देवी - ऊर्जा का प्रतीक

भारतीय दर्शन में दुर्गा या शक्ति को केवल देवी के रूप में नहीं, बल्कि कॉस्मिक एनर्जी (Cosmic Energy) के रूप में देखा गया है। आधुनिक विज्ञान भी मानता है कि पूरा ब्रह्मांड ऊर्जा से बना है। भौतिकी में इसे ऊर्जा और पदार्थ के रूपांतरण के सिद्धांत के रूप में समझाया जाता है। यही कारण है कि शक्ति साधना में देवी के विभिन्न रूपों को मानव चेतना की अलग-अलग ऊर्जा अवस्थाओं के रूप में देखा जाता है।

नौ विद्या : चेतना के नौ स्तर

भारतीय संस्कृति ने इस काल को उपवास, साधना, ध्यान और देवी ऊर्जा के जागरण से जोड़ा। शक्ति की यह साधना नौ रूपों में व्यक्त होती है, जिन्हें कई परंपराओं में नौ विद्या देवियाँ कहा जाता है—जिनमें पीताम्बरी देवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, तारा, भुवनेश्वरी, त्रिपुर सुंदरी, मातंगी और कमला जैसे रूपों का उल्लेख मिलता है। इनका तात्पर्य केवल देवी पूजा नहीं बल्कि चेतना के विभिन्न मनोवैज्ञानिक और ऊर्जा स्तरों से है। यदि इन शक्तियों को प्रतीकात्मक दृष्टि से देखें तो यह वास्तव में मानव मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के नौ आयामों को दर्शाती हैं।

आध्यात्मिकता और मनोविज्ञान

आधुनिक मनोविज्ञान मानता है कि मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य कई स्तरों पर काम करता है—भावनात्मक संतुलन, आत्मविश्वास, एकाग्रता, आत्मस्वीकृति और आंतरिक शांति। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा ने इन्हीं अवस्थाओं को देवी के रूपों के माध्यम से समझाया। यदि इन विद्याओं को वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो यह मानव मन के विभिन्न आयामों को दर्शाती हैं।

1. पीताम्बरी / बगलामुखी- मानसिक स्थिरता और एकाग्रता का प्रतीक। मनोविज्ञान में इसे फोकस और न्यूरल कंट्रोल से जोड़ा जा सकता है। ध्यान, मंत्र और उपवास के दौरान मस्तिष्क में न्यूरल गतिविधि धीमी होती है, जिससे तनाव कम और फोकस बढ़ता है।

2. छिन्नमस्ता- अहंकार के त्याग और आत्मबलिदान का प्रतीक। आधुनिक मनोविज्ञान इसे ईगो ट्रांसेंडेंस कहता है। मनोविज्ञान के अनुसार अत्यधिक अहंकार मानसिक तनाव और असुरक्षा को जन्म देता है। आत्मस्वीकृति मानसिक शांति का आधार बनती है।

3. धूमावती- वैराग्य और शून्यता की अवस्था। ईएसआई अवस्था जहाँ मन भ्रम और इच्छाओं से मुक्त होता है। आज के समय में इसे माइंडफुलनेस और मेडिटेशन के समान समझा जा सकता है। ध्यान और माईंडफुलनेस में इसे मेंटल डिटॉक्स की स्थिति कहा जा सकता है।

4. तारा- ज्ञान और मार्गदर्शन की शक्ति। यह मानव मस्तिष्क की इंट्यूटिव इंटेलिजेंस से जुड़ी है। जो मनुष्य की क्रिएटिव सोच से जुड़ी मानसिक क्षमता का प्रतीक है।

5. भुवनेश्वरी- विस्तार और स्वीकार्यता का प्रतीक। मनोविज्ञान में इसे ओपन कॉन्शियसनेस कहा जा सकता है।

6. त्रिपुर सुंदरी- संतुलन, सौंदर्य और सामंजस्य की अवस्था। भावनात्मक संतुलन ही मानसिक स्वास्थ्य का मूल आधार है।

7. मातंगी- वाणी और अभिव्यक्ति की शक्ति। न्यूरोसाइंस के अनुसार यह मस्तिष्क के लैंग्वेज सेंटर से जुड़ी क्षमता का प्रतीक है। न्यूरोसाइंस के अनुसार संगीत, मंत्र और जप मस्तिष्क के भाषा और भावनात्मक केंद्र को सक्रिय करते हैं। इससे मानसिक ऊर्जा और रचनात्मकता बढ़ती है।

8. कमला- समृद्धि और संतोष की ऊर्जा। यह मानसिक संतुष्टि और सकारात्मकता से जुड़ी अवस्था है। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि मानसिक संतोष और कृतज्ञता की भावना व्यक्ति के तनाव स्तर को कम करती है और सकारात्मकता बढ़ाती है।

नवरात्रि और शरीर का विज्ञान

नवरात्रि में उपवास रखने की परंपरा भी केवल धार्मिक नहीं है। आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा दोनों मानते हैं कि समय-समय पर भोजन का संयम शरीर के डिटॉक्स और मेटाबोलिक रीसेट में मदद करता है। उपवास के दौरान हल्का भोजन, ध्यान, मंत्र और साधना मन और शरीर के बीच संतुलन स्थापित करते हैं। जब व्यक्ति कुछ दिनों तक हल्का भोजन करता है तो पाचन तंत्र को आराम मिलता है। इससे शरीर की डिटॉक्स प्रक्रिया सक्रिय होती है। उपवास के दौरान शरीर ऊर्जा के लिए ग्लूकोज के बजाय फैट रिजर्व का उपयोग करने लगता है। आधुनिक चिकित्सा इसे मेटाबोलिक स्विच कहती है। व्रत और नियंत्रित भोजन से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है। यह शरीर को नए मौसम के अनुकूल बनने में मदद करता है। ध्यान और मंत्रजाप से मस्तिष्क में सेरोटोनिन और डोपामिन जैसे हार्मोन का संतुलन बेहतर होता है, जिससे मानसिक प्रसन्नता और शांति मिलती है।

इस प्रकार चैत्र नवरात्रि को यदि गहराई से समझा जाए तो यह केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं है। यह एक आध्यात्मिक-वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य प्रकृति के परिवर्तन के साथ स्वयं को संतुलित करता है। यह एक ऐसा सांस्कृतिक तंत्र है जिसमें शरीर का शुद्धिकरण (उपवास), मन का संतुलन (ध्यान और साधना), चेतना का विकास (देवी ऊर्जा की साधना) तीनों एक साथ काम करते हैं।

नौ विद्या देवियाँ वास्तव में मनुष्य के भीतर मौजूद उन शक्तियों का प्रतीक हैं जो मानसिक स्थिरता, शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक संतुलन की ओर ले जाती हैं। नौ विद्या देवियाँ वास्तव में उस आंतरिक यात्रा का प्रतीक हैं जिसमें मनुष्य भय, अहंकार, भ्रम और अज्ञान से ऊपर उठकर ज्ञान, संतुलन और चेतना की ऊँचाई तक पहुँचता है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में नवरात्रि को केवल पूजा नहीं बल्कि 'आत्मशक्ति के जागरण का उत्सव' कहा गया है। नवरात्रि केवल पूजा का पर्व नहीं बल्कि मानव चेतना और स्वास्थ्य के संतुलन का प्राचीन वैज्ञानिक मॉडल भी है।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र में सतत् प्रगति पथ पर

छत्तीसगढ़

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

- विगत दो वर्षों में **1600 से अधिक** चिकित्सकीय पदों पर भर्तियां
- दूरस्थ इलाकों तक सुगम चिकित्सा सेवाओं के लिए **पीएम जनमन योजना** अंतर्गत 57 डेडीकेटेड मोबाइल मेडिकल यूनिट
- टेलीमेडिसिन के माध्यम से विगत दो वर्षों में **2 लाख से अधिक** लोगों को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं
- आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत पिछले दो वर्षों में कुल 31.44 लाख से अधिक क्लेम प्रकरणों में लगभग **₹4551 करोड़** का उपचार/भुगतान
- मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना अंतर्गत पिछले दो वर्षों में कुल 2273 लाभार्थियों को **₹62.20 करोड़** की उपचार सहायता
- मुख्यमंत्री शासकीय अस्पताल रूपांतरण कोष अंतर्गत विगत दो वर्षों में 177 कार्यों हेतु **₹271.45 करोड़** की प्रशासकीय स्वीकृति
- **5 नए** शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना
- **6 नवीन** शासकीय फिजियोथैरेपी चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना
- **9 नवीन** शासकीय नर्सिंग महाविद्यालयों की स्थापना

संवाद- 13710/99

सुशासन से समृद्धि की ओर
ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in